जून 2004
Rs. 10 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

चन्दामामा

प्रस्तुत करता है

''स्वप्न - बालक बनो'' प्रतियोगिता

भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम बच्चों के साथ पारस्परिक क्रिया के क्रम में उन्हें भारत तथा भारतवासियों के भविष्य के लिए स्वप्न देखने की प्रेरणा देते रहे हैं। हाल में ही, २५ जनवरी को राष्ट्र के नाम सम्बोधन के बाद उन्होंने बच्चों के एक समूह को शपथ दिलायी। हमारे तरुण पाठकों को लिए दस-सूत्रीय शपथ नीचे दिया जा रहा है।

१. मैं अपनी शिक्षा अथवा कार्य को समर्पित भाव से आगे बढ़ाऊँगा और उसमें श्रेष्ठ बनूँगा।

२. मैं कम से कम दस अशिक्षित व्यक्तियों को लिखना और पढ़ना सिखाऊँगा।

३. मैं कम से कम दस पौधे रोपूँगा और निरन्तर देखभाल करके उन्हें निश्चित रूप से बड़ा करूँगा।

४. मैं ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में जाकर कम से कम पाँच व्यक्तियों को व्यसन और जूए की आदत से स्थायी रूप से मुक्ति दिलाऊँगा।

५. मैं अपने दुखी भाई-बन्धुओं की पीड़ा दूर करने का निरन्तर प्रयाम करूँगा।

६. मैं किसी धार्मिक , जातिय तथा भापा संबंधी मतभेद का समर्थन नहीं करूँगा।

७. मैं स्वयं ईमानदार रहूँगा और भ्रष्टाचार से मुक्त समाज के निर्माण का प्रयास करूँगा।

८. मैं एक प्रबुद्ध नागरिक बनने के लिए प्रयास करूँगा और अपने परिवार को सदाचारी बनाऊँगा।

९. मैं हमेशा उनका मित्र रहूँगा जो मानसिक और शरीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण जीवन से गुजर रहे हैं और हम सब के समान ही सामान्य जीवन जीने के लायक उन्हें बनाने के लिए कठिन श्रम करूँगा।

१०. मैं अपने देश और उपने देशवासियों की सफलता पर गर्व के साथ आनन्दोत्सव मनाऊँगा।

चन्दामामा भारत के बच्चों का एक अनुच्छेद यह लिखने के लिए आमंत्रित करता है कि वे आगामी स्वतंत्रता दिवस तक दस सूत्रों में ज्यादातर कितने सूत्रों को पूरा करने की उपलब्धि की आशा करते हैं। यह प्रतियोगिता आठ से लेकर पन्द्रह वर्ष की आयु के बीच के बालक-बालिकाओं के लिए खुला है।

प्रतियोगिता में भाग लीजिए और पुरस्कार जीतिए।

ये तीन प्रविष्टियाँ हमारे नवम्बर २००४ अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

अन्तिम तिथि ३१ अगस्त २००४

सूचना, पुरस्कार और प्रविष्टि कूपन संबंधी जानकारी के लिए जुलाई २००४ अंक देखिए।

प्रवेश

& चन्दामामा

ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

बम्पर पुरस्कार

एसर कम्प्यूटर

द्वितीय पुरस्कार

कैलकुलेटर्स

न्यूट्रीन - चन्दामामा ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, जो मई २००४ में आरम्भ की गयी, छः महीनों तक जारी रहेगी। निम्नलिखित प्रश्न तुम्हें रोचक लगेंगे और तुम्हारे खेल सम्बन्धी ज्ञान को बढ़ायेंगे। सही उत्तरों को ढूँढो, प्रवेश पत्र को भरो और इस पृष्ठ को पाँच न्यूट्रीन चॉकोलेट एक्लेयर्स रैपर्स के साथ अन्तिम तिथि के पहले **न्यूट्रीन - चन्दामामा प्रतियोगिता, चन्दामामा इंडिया लि., ८२, डिफेंस आफिसर्स कॉलोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७** के पते पर भेज दो।

यह अखिल भारत प्रतियोगिता है। हर महीने इस पृष्ठ को सावधानी से देखो और प्रतियोगिता में भाग लो। पुरस्कार में हर महीने क्रमशः ३ कोनिका कैमरे, १० कैलकुलेटर्स तथा ५० न्यूट्रीन मिठाई के डलिये हैं। पाँच मासिक प्रतियोगिताओं के अन्त में छठी प्रतियोगिता के लिए एक बम्पर ड्रा है और विजेता को अन्य सामान्य पुरस्कारों के अतिरिक्त एक पर्सनल कम्प्यूटर दिया जायेगा। सभी छः महीनों में भाग लेने पर ही बम्पर ड्रा में शामिल होने के लिए योग्य हो सकते हैं। बम्पर ड्रा का परिणाम डाक द्वारा दिसम्बर में घोषित किया जायेगा।

न्यूट्रीन - चन्दामामा ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-२

सावधानी से प्रश्नों का अध्ययन करें तथा प्रत्येक प्रश्न के लिए दिये गये खाली स्थान में सही उत्तर पर टिक (✓) का निशान लगायें।

१. ओलम्पिक मॅरथन दौड़ में सबसे तेज दौड़ने का रेकार्ड समय क्या है?

☐ २ घ.१९मि.२१से. ☐ २ घ.९मि.२१से. ☐ २घ. ९ मि.४१ से.

२. ओलम्पिक में पुरुष की लम्बी छलांग में विश्व रेकार्ड किसने बनाया?

☐ चार्ल्स ऑस्टन ☐ जॉ गालफियाने ☐ बॉब बीमैन

३. महिला की ऊँची छलांग में अधिकतम ऊँचाई का रेकार्ड क्या है?

☐ १.९५ मी. ☐ २.०० मी. ☐ २.५ मी.

४. सन् १९८८ में एशिया के किस नगर में ओलम्पिक का आयोजन किया गया?

☐ टोकियो ☐ सियोल ☐ बिजिंग

५. इस महीने, इस अंक में प्रकाशित न्यूट्रीन विज्ञापन में कितने टी (T) अक्षर का प्रयोग हुआ है?

☐ १० ☐ १६ ☐ १४

क्या तुम जानते थे?

ओलम्पिक मशाल विगत २५ मार्च को ओलम्पिया में प्रज्वलित किया गया था। यह इस वर्ष के प्रथ म मशालची ओलम्पियन बरछा क्षेपक कोस्टास गैट्सियूडिस को हस्तान्तरित किया गया। मशाल भारत से होकर १० जून को गुजरेगी।

<u>प्रतियोगिता के नियम:</u> ● न्यूट्रीन, चन्दामामा के कर्मचारी तथा उनके सम्बन्धी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते ● निर्णायकों का चुनाव न्यूट्रीन का एक मात्र विवेकाधिकार होगा ● केवल भारतीय मूल के १५ वर्ष से नीचे की आयु के बच्चे ही प्रतियोगिता में भाग ले सकते ● केवल न्यूट्रीन को अधिकार होगा कि यह प्रतियोगिता को और आगे बढ़ाये या पहले बन्द करे ● प्रतियोगी की आयु के प्रमाण के लिए जन्मतिथि प्रमाणपत्र मान्य होगा ● सही प्रविष्टियों में से ड्रा द्वारा विजेताओं का चुनाव होगा ● विजेताओं को व्यक्तिगत रूप से सूचित किया जायेगा ● पुरस्कृत वस्तुओं के स्थान पर नकद द्वारा पूर्ति नहीं की जायेगी ● पुरस्कृत वस्तुओं की गुणवत्ता का आश्वासन सम्बद्ध उत्पादकों का होगा ● एक प्रतियोगी प्रत्येक महीने में एक प्रविष्टि भेज सकता ● वह किसी एक प्रतियोगिता में या सभी छः प्रतियोगिताओं में भाग ले सकता ● प्रविष्टि पत्रों के अतिरिक्त कोई अन्य पत्र-व्यवहार नहीं स्वीकार किया जायेगा ● कूपन पर तुम्हारे हस्ताक्षर करने का अर्थ होगा कि कूपन पर दिये गये नियमों से तुम सहमत हो ● अन्तिम तिथि के बाद प्राप्त प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जायेगा ● यदि किसी प्रतियोगिता में सभी प्रविष्टियाँ सही नहीं हैं, तब अधिकतम सही उत्तरों के आधार पर विचार किया जायेगा और उन्हीं में से ड्रा किया जायेगा ● निर्णायकों के सभी निर्णय अन्तिम माने जायेंगे।

अन्तिम तिथि: ३० जून २००४

नाम :...

उम्र :................. कक्षा :..................... जन्मतिथि :.......................................

घर का पता तथा पिन कोड..

....

हस्ताक्षर...

KOKA NAKA

MAHA LACTO

India's largest selling sweets and toffees.

nutrine

सम्पुट - १०८ जून २००४ सञ्चिका - ६

विशेष आकर्षण

भल्लूक मांत्रिक १३

स्वार्थ में परोपकार १९

विष्णु पुराण ४५

भूमि को कैसे समतल बना गया ५१

अंतरंग

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

जुलाई २००४ से प्रति अंक का मूल्य १२ रुपये होगा ।

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये ।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

एक बृहत् एवं गौरवशाली घटना

विश्व अभी-अभी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना का साक्षी रहा है - विश्व के विशालतम प्रजातंत्र में स्थापित हो रहा प्रगति का एक और मील-पत्थर। लोक सभा तथा कुछ राज्यों में विधान सभाओं के चुनाव का अर्थ है - एक विराट आयोजन। दसियों हजार मतदानकेन्द्रों की स्थापना, कार्य कर्त्ताओं तथा यंत्रों का ठीक समय पर वितरण, पूर्वनिर्दिष्ट समय पर मतदान का आरम्भ व समापन - इन सब के लिए एक जटिल, विस्तृत, खर्चीले व साहसिक गतिविधि-तन्त्र की आवश्यकता थी। कुछ मतदान केन्द्र ऐसे थे जहाँ तक न रेल से, न मोटर वाहनों से पहुँचा जा सकता था। कार्यकर्त्ताओं तथा उपकरणों को वहाँ हाथियों द्वारा पहुँचाया गया। भारतीय जनता ने इस साहसिक कार्य में बड़ी बहादुरी से भाग लिया। एक नयी ला `क सभा, जो चौदहवीं है, अभी-अभी जन्म ले चुकी है और यही स्थिति कुछ राज्यों में विधान सभाओं की है।

यद्यपि बीसवीं शताब्दी में उपनिवेशवाद का खात्मा हो गया फिर भी अधिकतर देशों में प्रजातंत्र स्थापित करने में उस आजादी का उपयोग नहीं किया गया। तानाशाही या सैनिक शासन अभी भी उन पर हावी है। लेकिन भारत एक देदीप्यमान अपवाद है।

प्रायः देखा जाता है कि प्रतिनिधियों के चुनाव में हमारी पसन्द के आधार गलत होते हैं - जैसे जाति, समुदाय, धर्म। हमें अवश्य याद रखना चाहिये कि भारत माता धरती का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक ईश्वरीय शक्ति हैं - जैसा कि श्रीअरविन्द ने स्वाधीनता आन्दोलन के प्रथम चरण के दौरान कहा था। प्रजातंत्र को भारत माता को निवेदित एक योग्य भेंट तभी बनाया जा सकता है जब हम सही व्यक्तियों की खोज करें और चुनाव में उम्मीदवार बनने के लिए उनसे अनुनय - विनय करें।

सम्पादक : *विश्वम*

नमकीन बीलु

सुभाष दानापुर के धनियों में से एक है। धनी होते हुए भी वह अपने बेटे चंद्र और सूर्य को लेकर बहुत ही चिंतित रहता था। दोनों क्रमशः दस और बारह साल केहो गये, पर बुद्धि उनमें रत्ती भर भी नहीं थी।

सुभाष से मिलने आये उसके रिश्तेदार ने उससे कहा, ''अपने बेटों को लेकर इतना परेशान क्यों होते हो? हमारे गाँव में एक पंडित आये हुए हैं। वे मनुष्यों के मन को यों ही ताड़ लेते हैं। उनमें कमियाँ हों तो उन्हें सुधारने में भी वे पटु हैं।

सुभाष पंडित से मिला। उसकी बतायी सभी बातों को सुनने के बाद पंडित ने कहा, ''मनुष्यों में जिस प्रकार से बुद्धिमान होते हैं, उसी प्रकार से भोले और नादान भी होते हैं। यह कोई असहज बात नहीं है। किसी दिन मैं तुम्हारे घर आऊँगा और तुम्हारे बेटों की परीक्षा लूँगा।''

एक हफ़्ते के बाद पंडित, सुभाष के घर आये। उस समय सुभाष दोनों बेटों की थालियों में खाना परोस रहा था। नमकीन बीलु एक बरतन में रखा हुआ था।

सूर्य और चंद्र दोनों ने उसकी माँग की। पंडित ने उन दोनों से कहा, ''वह नमकीन है। एक क़ौर खा लोगे तो तुम्हें इसका पता लग जायेगा। बस एक बार उसे देख लेना।''

दोनों भाई खाने लग गये। तब चंद्र ने कहा, ''भैया ने दो बार बीलु की ओर देखा है। वह ज़रूर बीमार पड़ जायेगा।''

तब पंडित ने सुभाष से कहा, ''तुम्हारे दोनों बेटों में से तुम्हारा छोटा बेटा थोड़ा-सा अक़्लमंद है। विद्याभ्यास उसी से शुरू करूँगा।''

-कमलनाथ

आभूषणों का व्यामोह

शेखर की माँ उसके तीन साल की उ म्र में ही गुज़र गयी। उस का बाप महति अकेले उसका पालन-पोषण कर नहीं पाया। उसने दुर्गा नामक एक युवती से दूसरी शादी कर ली। ससुराल आने के एक महीने के अंदर ही महति को मालूम हो गया कि उसकी पत्नी झगड़ालू और कर्कशा है।

दुर्गा अपने पति की परवाह नहीं करती थी। अपने अलंकार के लिए आगे-पीछे सोचे बिना बेरोकटोक व्यर्थ खर्च कर देती थी। गहनों पर वह मरती थी।

महति तीन एकड़ उपजाऊ खेत का मालिक था। इससे जो आमदनी होती थी, उसी के बल पर वह परिवार चलाता आ रहा था। अब उसके लिए दुर्गा की फिज़ूलखर्ची एक गंभीर समस्या बन गयी। शेखर उस समय दस साल का हो गया। जब से दुर्गा महति की पत्नी बनकर आयी, तब से घर का पूरा काम शेखर से करवाने लगी। घर में काम कर चुकने के बाद वह स्कूल जाता था और ध्यानपूर्वक पढ़ता था। उसकी अदम्य इच्छा थी कि उच्च शिक्षा प्राप्त करूँ।

परंतु दुर्गा ने शेखर को उच्च कक्षा में प्रवेश करने से रोका। उसने शेखर से एक दिन कह भी ड़ाला, ''जो पढ़ा, वही बहुत है। तुम्हारा बाप कोई ज़मींदार नहीं है। खेत में काम करनेवाले एक कुली के लिए इतनी ही पढ़ाई बहुत है। और आगे पढ़ने का विचार छोड दो।''

पर, महति के विचार कुछ और ही थे। उसने पत्नी दुर्गा से कहा, ''यही हमारा एकमात्र बेटा है। मानता हूँ कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अधिक धन चाहिये। अगर ज़रूरत पड़ी तो आधा एकड खेत बेच देंगे और इसे पढ़ायेंगे। पढ़कर वह बुद्धिमान बनेगा और खेत की देखभाल और बेहतर तरीक़े से करेगा।''

दुर्गा ने पति महति को फटकारते हुए कहा,

नरेंद्र दीक्षित

''कुछ भी हो जाए, खेत का एक इंच भी बेचने नहीं दूँगी।'' उसने चिल्लाते हुए कह डाला।

इस घटना के दो दिनों के बाद, एक व्यक्ति महति को ढूंढ़ता हुआ उसके घर आयाऔर उसके हाथ में एक थैली थमाते हुए कहने लगा, ''महाशय, शहर में धान का व्यापार करनेवाले नीलकंठ को दस हज़ार रुपये देकर बहुत पहले आपने उनकी सहायता की। अब उनका व्यापार उन्नत स्थिति में है। परंतु हाँ, उनकी तबीयत आजकल कुछ ठीक नहीं है। उन्हें इस बात की चिंता खाये जा रही है कि कहीं आपका ऋण चुकाये बिना मर न जाऊँ।'' यह कहकर नमस्कार करते हुए वहाँ से वह चला गया।

महति ने बड़ी ही खुशी से दुर्गा से कहा, ''लक्ष्मीदेवी ने अकस्मात हमारे घर का दरवाज़ा खटखटाया। इस धन में से एक हिस्सा खर्च करेंगे और शेखर को उच्च शिक्षा दिलायेंगे। अ ब खेत का एक इंच भी बेचने की कोई ज़रूरत नहीं।''

दुर्गा ने तुरंत थैली को महति के हाथ से खींच कर लेते हुए कहा, ''शेखर की पढ़ाई की ऐसी तैसी। अगले हफ़्ते मेरी चाची की पोती की शादी है। इस रकम से चंद्रहार खरीदूँगी। शाम को शहर की सोने की दुकान जायेंगे।''

पास ही खड़े शेखर ने देखा कि पिता बहुत परेशान हैं। उसने पिता का हाथ पकड़ते हुए कहा, ''जाने दो बापू, माँ की इच्छा पूरी करो। मैं पढ़ाई बंद कर दूँगा और तुम्हारे साथ खेत में काम करूँगा।'' उसी दिन दुर्गा सोने की दुकान गयी। दस हज़ार रुपयों के साथ दो हज़ार और खर्च करवाकर चंद्रहार खरीद लिया।

किराये की बैलगाड़ी में वे गाँव लौटने लगे। अंधेरा छा रहा था। गाड़ी जब थोड़ी दूर और गयी तब पीछे से तेज़ी से आती हुई एक बग्घी आगे निकल गयी। उस समय बग्घी से कोई चीज़ गिर गयी। बग्घी में बैठे लोगों की दृष्टि इसपर नहीं गयी और पीछे से तेज़ी से अपना पीछा करनेवालों से बचने के लिए वे घोड़े को तेज़ दौड़ाते हुए जाने लगे। महति और दुर्गा की बैल गाडी जैसे ही वहाँ पहुँची, दुर्गा ने गाड़ीवाले रतन को आदेश दिया कि वह उस चीज़ को उठा कर ले आये।

रतन ने गाड़ी रोक दी और बग़ल में पड़ी चीज़ को उठा ले आया। वह काठ की एक चिकनी संदूकची थी। रतन ने उसे खोलकर देखा।

चमकते हुए सोने के हार को देखकर वह चिल्ला उठा, "बाप रे, कितना बढ़िया हार !"

दुर्गा ने तुरंत उससे हार छीन लिया और कहने लगी, "शहर जाने के लिए मैंने ही गाड़ी मंगवायी और इस संदूकची को ले आने मैंने ही तुम्हें भेजा। यह हार मेरा है।"

रतन ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता हुआ कहने लगा, "बग्घी से इसे गिरते हुए मैंने भी देखा। इसे मैं ही उठा कर भी लाया, इसलिए यह मेरा है।"

महति ने पत्नी से कड़े स्वर में कहा, "यह तो बहुत ज्यादती है।"

दुर्गा ने पति की बातों की परवाह न करते हुए रतन से कहा, "चाहो तो किराया सौ रुपये और ज्यादा दूँगी। लो, चुप हो जाओ।"

रतन बड़बड़ाता हुआ चुप रह गया।

दूसरे दिन सबेरे शेखर खेत में काम करने चला गया। रास्ते में उसकी मुलाक़ात बैल गाड़ीवाले रतन से हुई।

रतन ने उससे शहर से लौटते समय जो हुआ, पूरा-पूरा बता दिया। तब शेखर ने उससे कहा, "जिसने हार खो दिया, उसे बहुत दुख होता होगा। उसे ग्रामाधिकारी को सौंपना ही न्यायसंगत है। इसलिए तुम यह बिषय ग्रामाधिकारी से बता दो।"

"ऐसा करने पर मुझे क्या मिलेगा? उलटे मुझपर चोरी का इलज़ाम मढ़ा जा सकता है। तिसपर, वह जमींदार की बग्घी है। उस हार के खो जाने मात्र से उनका कुछ नहीं जाता। तुमसे हो सके तो ऐसा कोई उपाय बताना, जिससे वह हार मेरे हाथ आ जाए", रतन ने कहा।

"दूसरों की संपत्ति को अपना बना लेने की इच्छा कदापि ठीक नहीं। वह वस्तु जिनकी है, उसे उन्हें सौंप देना ही समुचित है। तुम्हारा कहना है कि वह बग्घी ज़मींदार की है, इसलिए ज़मींदार से यह बात बता दो। यही तुम्हारे लिए सही होगा। नहीं तो अनावश्यक कष्टों में फंस जाओगे", शेखर ने उसे समझाया।

"नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा। पता नहीं क्यों? मुझे बहुत डर लग रहा है। बड़ों का क्या भरोसा कि वे मेरे साथ छल-कपट नहीं करेंगे?" यों कहता हुआ रतन वहाँ से चला गया।

एक हफ़्ते के बाद दुर्गा वह हार पहनकर अपनी चाची की पोती की शादी पर गयी। सबने उस

हार की भरपूर प्रशंसा की। उन्होंने दुर्गा से कहा, ''हार को देखते हुए लगता है कि किसी ज़मींदार के परिवारवालों ने इसे ख़ास तौर से बनवाया है।''

विवाह में आये सभी जब भोजन करने बैठ गये तब रायपुर के ज़मींदार के नौकर तेज़ी से अंदर आये और कहने लगे, ''हाल ही में जमींदार के घर में चोरी हुई है। चोरों ने उनकी बड़ी संदूक तोड़ दी और गहने लूटकर भाग गये। हमें अभी-अभी मालूम हुआ है कि उन चोरों में से कुछ चोर यहाँ हैं। कहाँ हैं वे लोग? हमसे बचकर भाग नहीं सकते।''

फिर वे सबको ध्यान से देखने लगे। उस समय एक नौकर ने दुर्गा के गले में हार देख लिया और कहने लगा, ''इतना साहस! चोरी का माल पहनकर दिन-दहाड़े लोगों के बीच घूम-फिर रही हो? कहीं तुम चोरों की रानी तो नहीं हो?''

दूसरे ही क्षण ज़मींदार के नौकरों ने दुर्गा को पकड़ लिया और उसे व उसके पति महति को ज़मींदार के पास ले गये।

शेखर को जैसे ही मालूम हुआ कि उसके पिता और माँ गिरफ्तार कर लिये गये हैं तो वह रतन को लेकर जमीन्दार के पास गया। रतन ने पहले आने से मना किया, पर शेखर उसे समझा-बुझा कर ले गया। उनके पहुँचने के पहले ही जमीन्दार ने महति और दुर्गा को जेल में डाल दिया। शेखर रतन के साथ जमीन्दार से मिला और उस दिन जो हुआ उसका पूरा विवरण रतन ने ज़मींदार

को दिया। पूरा विवरण जानने के बाद ज़मींदार ने रतन से पूछा, ''तुम्हारा कहना है कि बग्घी ज़मींदार की है। बताना, वह किस तरफ़ से किस तरफ़ गयी?''

''रायपुर से रामबर की ओर गयी।''

''बता सकते हो, गाड़ी चलानेवाला कैसा था?'' ज़मींदार ने पूछा।

''मैंने उसका चेहरा स्पष्ट नहीं देखा। उसकी घनी दाढ़ी थी, लाल पगडी पहना हुआ थाँ, रतन ने कहा।

ज़मींदार ने मूछों पर उंगलियाँ फेरते हुए आज्ञा दी ''जाओ, ''घोड़ागाडीवाले मार्तंड को ले आओ।''

थोड़ी ही देर में मार्तंड वहाँ ले आया गया। आते ही उसने ज़मींदार के पैरों पर गिरते हुए कहा, ''क्षमा कीजिये, प्रभु! बाल-बच्चोंवाला हूँ। प्रलोभन में आकर रामभूपति का विश्वास करके मैंने ही चोरी के गहनों के साथ उसे रामबर पहुँचाया।''

उसके बाद जो तहक़ीकात हुई, उससे मालूम हुआ कि ज़मींदार के साले रामभूपति ने उस हार के अलावा बाक़ी सभी गहने नगर के गहनों के व्यापारी को बेच दिये।

''अब साफ़ हो गया कि रामभूपति बुरी लतों का शिकार ही नहीं है बल्कि चोर भी है। अब और देरी करनी नहीं चाहिये। उसे सज़ा देनी ही पड़ेगी। उसे तुरंत क़ैद करो आ ैर जेल में ड़ाल दो।'' ज़मींदार ने आज्ञा दी।

साथ ही ज़मींदार ने महति और दुर्गा को जेल से छुड़वाया और उनसे कहा, ''तुम्हारे बेटे की अच्छाई के कारण तुम दोनों को माफ़ कर रहा हूँ। स्त्रियों में आभूषणों का व्यामोहहोता है और यह सहज भी है। पर यह ज़रूरत से ज़्यादा होना नहीं चाहिये। भविष्य में सावधान रहना,'' यों ज़मींदार ने दुर्गा को चेतावनी दी।

दुर्गा ने अपनी ग़लती मान ली और क़सम खायी कि कभी-भी ऐसी ग़लती नहीं करूँगी।

शेखर की ईमानदारी व कुशाग्र बुद्धि से संतुष्ट ज़मींदार ने उसकी भरपूर प्रशंसा की। साथ ही उच्च शिक्षा पाने के लिए उसे जो-जो सहूलियतें चाहिये, उन सबका प्रबंध किया।
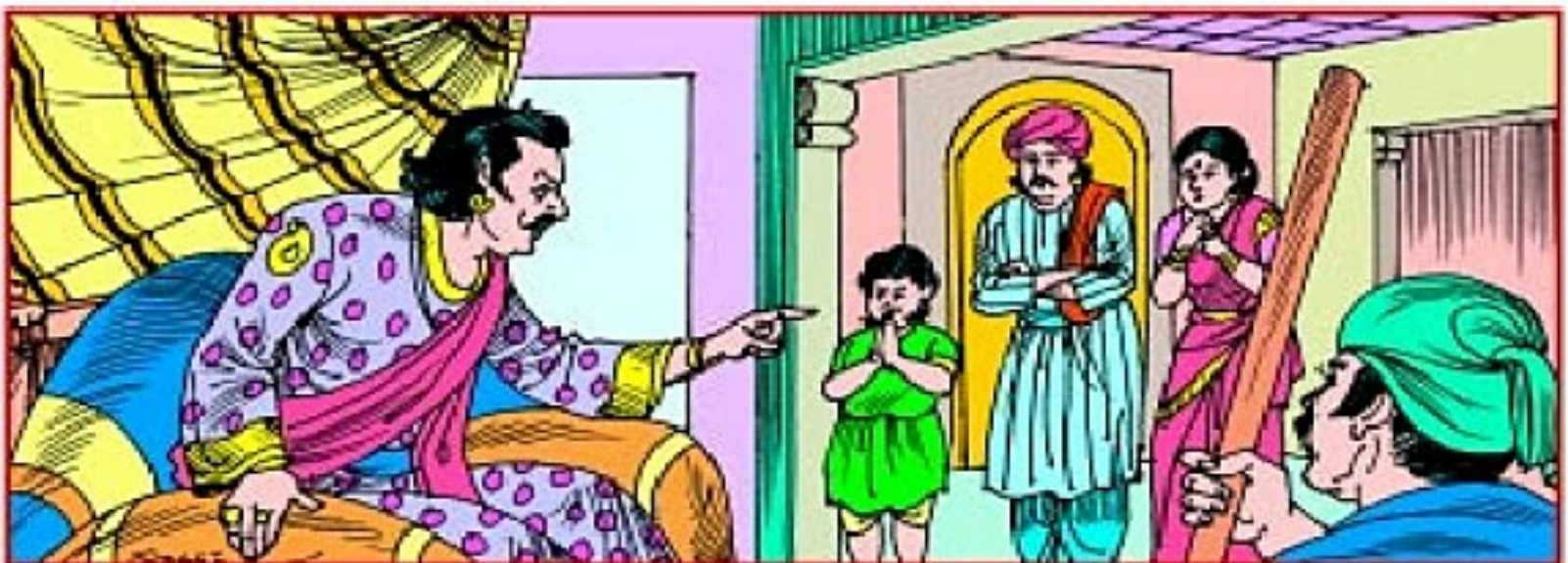
भल्लूक मांत्रिक

8

(राजा दुर्मुख अपना पीछा करनेवाले भल्लूक मांत्रिक से बचने के लिए भाग खड़ा हुआ। पर राक्षस उग्रदण्ड को देखते ही डर के मारे बेहोश हो गया। उसने अंग रक्षक को नाले से पानी लाने का आदेश दिया। नाले के पास सूंड कटा हाथी उसे देख उत्तेजित हो गया और चिंघाड़ते हुए उसका पीछा करने लगा। उसके बाद...)

राक्षस उग्रदंड ने अपने निकट आनेवाले हाथी की ओर नज़र दौड़ाकर बधिक भल्लूक से कहा, "सुनो, यह सूंड कटा हाथी क्या तुम्हारा वाहन है? यह तो जंगली हाथी लगता है।"

"जी हाँ! यह तो जंगली हाथी है। जंगल में इसने मेरा रास्ता रोकना चाहा, तब मैंने उसकी सूंड पर अपने परशु का प्रहार किया और उस पर सवार हो उसके कान मरोड़ते हुए यहाँ पर ले आया।" बधिक भल्लूक ने उत्तर दिया।

इतने में हाथी उनके समीप आ पहुँचा। इसे देख लुटेरा नागमल्लु और उसके दो साथी गुफा की ओर दौड़ पड़े। बेहोश राजा दुर्मुख हठात् उठ खड़ा हुआ और तीर की भांति पेड़ों की ओट में भाग गया। अंग रक्षक चीखकर उग्रदण्ड के पीछे जा खड़ा हुआ। उग्रदण्ड अपना पत्थरवाला गदा उठाकर बोला, "अबे, तुमने थोड़ी देर पहले कहा था कि तुम मेरे अंग रक्षक हो! अब लगता है कि मैं ही तुम्हारा अंग रक्षक हूँ! कमबख़्त, कायर कहीं

अगले दोनों पैरों को कस लिया, फिर ऊपर उठाते हुए बोला-''अरे अंग रक्षक! तुम जल्दी जाकर जंगली बेलों को तोड़ लाओ, इसके पैर बांध देते हैं।''

अंग रक्षक उग्रदण्ड का आदेश पाकर झाड़ियों की ओर दौड़पड़ा। बधिक भल्लूक बेहोश हुए व्यक्ति की भांति आँख खोलते व बंद करते हुए बायें हाथ से अपना सिर पकड़कर बोला-''राक्षस उग्रदण्ड, मेरे जादू के परशु से भी तुम्हारा देह-बल ज़्यादा ताक़तवर मालूम होता है। तुमने मुझे बचाया, मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। माँगो, तुम क्या चाहते हो?''

उग्रदण्ड ने बधिक भल्लूक की ओर मंदहासपूर्ण दृष्टि दौड़ाकर कहा, ''मुझे अगर कुछ मांगना हो तो वह तुम्हारे गुरु भल्लूक मांत्रिक से ही कुछ माँगना है। फिलहाल यह बिगड़ा हुआ हाथी कुछ हरकत न कर बैठे। तुम इसके पैर कसकर पकड़ लो।''

का!'' यों कहकर अपनी ओर बढ़नेवाले हाथी के रास्ते से हट गया।

बधिक भल्लूक परशु घुमाते हाथी के सामने जाकर बोला, ''ठहरो, क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना? मैं बधिक भल्लूक हूँ और तुम मेरे वाहन हो।''

बधिक भल्लूक की बात पूरी भी न हो पाई थी कि हाथी ने उसे अपनी सूंड में लपेटकर उठाया और दूर फेंकने को हुआ।

तभी उग्रदण्ड छलांग मारकर उस पर बैठ गया, उसके एक कान को मरोड़कर पकड़ लिया, तब अपने गदे से उसकी बगल में प्रहार किया। चोट खाकर हाथी ने बधिक भल्लूक को नीचे खिसका दिया और धम्म से नीचे गिर पड़ा। उस वक़्त उग्रदण्ड ने बिजली की गति से जाकर उसके

बधिक भल्लूक ने उग्रदण्ड की ओर तीव्र दृष्टि दौड़ाकर कहा, ''मैं अपने इस कमबख़्त वाहन के पैर पकड़ लूँ? इससे बढ़कर कोई अपमान की बात हो सकती है? लो, अभी मैं अपने जादू के परशु से इसके सर के सौ टुकड़े करने जा रहा हूँ।'' यों कहते उसने अपना परशु उठाया।

''अबे, रुक जाओ! तुमने आज तक बधिक की ज़िंदगी बिताई ! अगर तुम इस हाथी को मार डालोगे तो तुम अपना काम पूरा कर अपने मालिक भल्लूक मांत्रिक के पास कैसे जा सकोगे?'' उग्रदण्ड ने पूछा।

उग्रदण्ड ने बधिक को जब उसके काम की याद दिलाई, तब वह उछलकर कूद प .डा और बोला, "हाँ, भूल गया था! पर वह दुष्ट राजा दुर्मुख है कहाँ? अभी तक वह बेहोश हो यहीं गिरा हुआ था?" इन शब्दों के साथ बधिक ने चारों ओर अपनी नज़र दौड़ाई।

नीचे गिरा हुआ हाथी उग्रदण्ड की पकड़ से बचने के लिए चिंघाड़ करते हंगामा मचाने लगा। पर उग्रदण्ड अपनी पकड़ को ढीला किये बिना ही हुंकार करके बोला, "अरे अंग रक्षक! तुम कहाँ मर गये हो? बेल तोड़ लाने में इतनी देर क्यों करते हो?"

"उग्रदण्ड साहब! मैं अभी अया!" यों कहते डाकू नागमल्ल और उसके दो अनुचर एक लंबा रस्सा लिये वहाँ पहुँचे।

उग्रदण्ड ने उन्हें आदेश दिया कि रस्से से हाथी के पैर बांध दे, तब बोला, "वाह, तुम लोग सच्चे चोर हो! जरूरत की चीज़ तुम लोग सावधानी से अपने पास रखते हो?"

नागमल्ल ने हाथी के पैरों को बांधने का काम अपने अनुचरों को सौंप दिया, तब बोला, "उग्रदण्डजी! हम तो जंगली जीव हैं! आप जब यहाँ से जायेंगे तब आप को हमारी एक इच्छा की पूर्ति करनी है।"

"क्यों नहीं? ज़रूर पूरा करूँगा! तुम लोग यही चाहते हो न कि इस बधिक भल्लूक के हाथों से तुम तीनों के सर कटवा दूँ?" उग्रदण्ड ने कहा।

ये बातें सुन नागमल्ल आपाद मस्तक कांप उठा। वह कुछ कहने को हुआ, तभी बधिक भल्लूक "सिरस भैरव!" चिल्लाते परशु उठाकर गरज उठा-"अबे! राहगीरों को लूटनेवाले दुष्टो! राजा दुर्मुख कहाँ है? इसी क्षण न बताओगे तो तुम्हारे सर काट डालूँगा।"
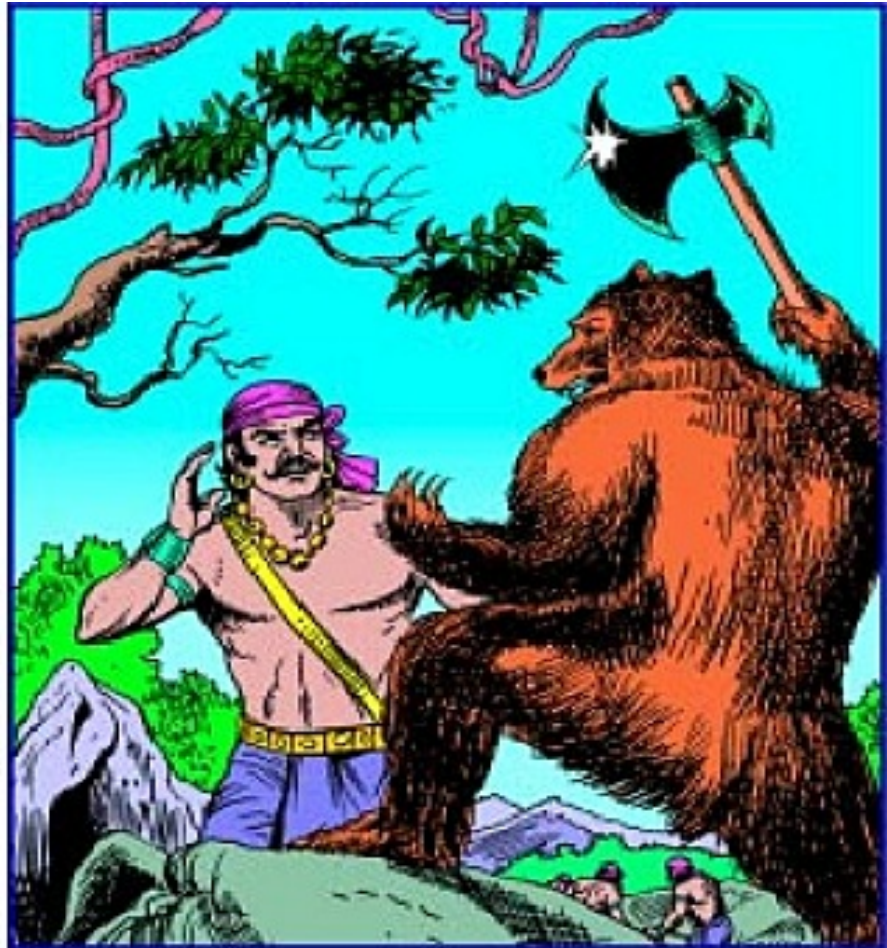
लुटेरा नागमल्ल कांपकर बोला, "भल्लूक साहब! मुझे मत मारो! अपने को दुर्जय गुप्त बताकर झूठ बोलनेवाला राजा दुर्मुख बेहोश हो इसी प्रदेश में कहीं पड़ा हुआ है न?"

"मैं भी यही पूछ रहा हूँ! वह इस वक़्त कहाँ पर है? यदि मैं उसका सर लेता हुआ न जाऊँ तो भल्लूक मांत्रिक मेरा सर काट डालेंगे।" बधिक भल्लूक ने रोनी सूरत बनाकर कहा।

इस बीच नागमल्ल के दोनों अनुचरों ने हाथी के अगले पैरों को रस्सों से कसकर बांध डाला।
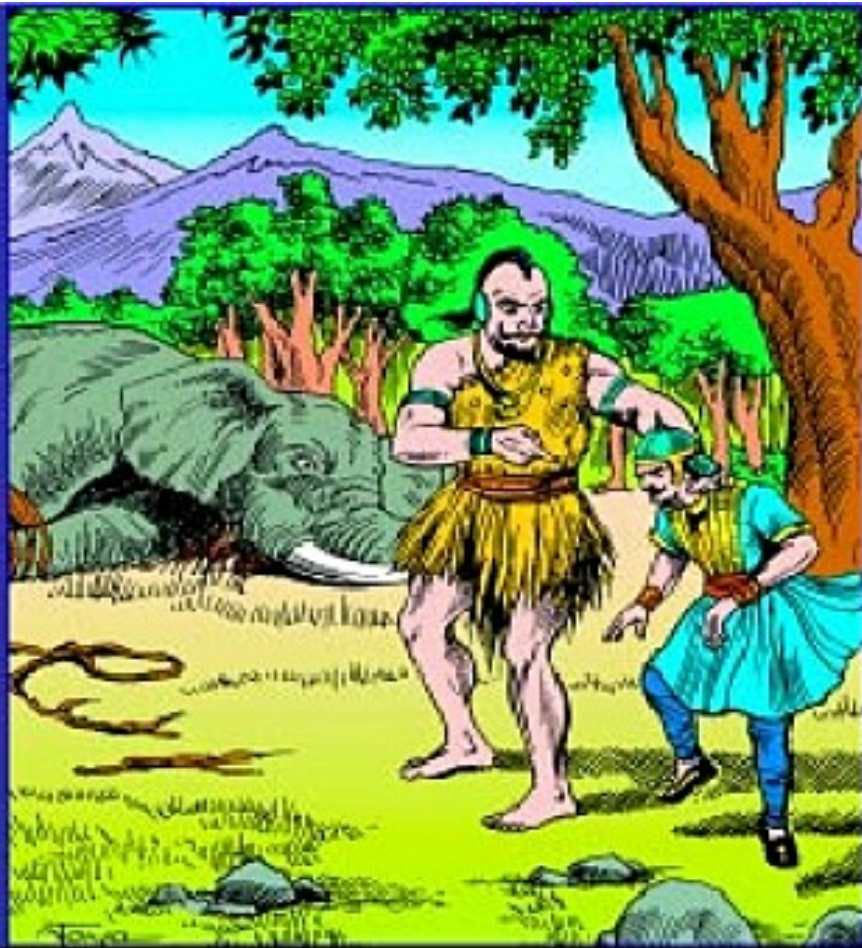
वह अपने पिछले पैरों को झाड़ते हुए उठने को परेशान होने लगा। उसी समय अंग रक्ष क लंबे जंगली बेलों को कंधे पर उठाये आ पहुँचा।

राक्षस उग्रदण्ड ने नागमल्ल के अनुचरों को आदेश दिया कि उ न जंगली बेलों से हाथी की पिछली टांगों को भी बांध दे। तब अंग रक्षक से बोला, ''अरे अंग रक्षक, आँखें तरेरे देखते क्या हो? तुम अपना कोई रहस्य छिपाना चाहते हो? पेड़ों की ओट में गये राजा दुर्मुख को कहीं छिपाकर तो नहीं आये हो?''

यह सवाल सुनकर अंग रक्षक चौंक पड़ा और बोला, ''उग्रदण्ड महाराज! इस वक़्त मैं दुर्मुख का नहीं बल्कि आप का अंग रक्षक हूँ न?''

इस पर बधिक भल्लूक ने दो क़दम आगे बढ़ाये और दांत भींचते हुए अंग रक्षक से कहा, ''अबे, तुम जानते हो कि दुर्मुख कहाँ छिप गया है ! तुम्हारी यह गिद्ध दृष्टि ही इसका सबूत है। सच बताओगे या तुम्हारा सर काट दूँ?'' इन शब्दों के साथ उसने अपना परशु उठाया।

अंगरक्षक चीख़ उठा और उग्रदण्ड के पीछे जाकर खड़ा हो बोला, ''महाराज! अपने अंगरक्षक की रक्षा की जिम्मेदारी अब आप ही की है!''

उग्रदण्ड अंग रक्षक की गर्दन पकड़कर आगे खींचते बोला, ''अबे, अगर तुम दुर्मुख राजा के छिपने की ख़बर न दोगे तो तुम्हारा सर बचाना मेरे लिए नामुमक़िन होगा! तुम जब जंगली बेल लाने गये, तब तुमने भागनेवाले उस दुष्ट को देख लिया है। तुम उसके साथ कोई मंत्रणा करके यहाँ पर आये हो! यह बात सच है न? सच्ची बात न बताओगे तो तुमको हाथी की सूंड के हाथ सौंप दूँगा।'' यों कहते नीचे गिरे हाथी की ओर अंग रक्षक को खींच लिया।

अंग रक्षक दहाड़ मारकर रोते हुए अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर बोला, ''उग्रदण्ड महाराज! मैं आप की शरण चाहता हूँ। राजा दुर्मुख ने मुझे आधा राज्य देने का प्रलोभन दिया है। यह बताया है कि अगर मैं आप लोगों की आँखों में धूल झोंककर चला जाऊँ तो हम दोनों उदयगिरि नगर पहुँच सकते हैं। कहते हैं कि इसके बाद वे अपने आधे राज्य के लिए मेरा राज्याभिषेक करेंगे।''

''हाँ! तुमने उसकी बातों पर यक़ीन कर लिया है न?'' इन शब्दों के साथ वह ज़ोर से हँस पड़ा, तब अंग रक्षक से बोला, ''अरे अंग रक्षक! तुम

मानव होकर मानव की बातों पर बिश्वास करते हो, यह बात मुझे आश्चर्यजनक मालूम होती है। उदयगिरि जाने पर तुम्हारा राज्याभिषेक नहीं होगा, बल्कि राजधानी के बीच कड़ी धूप में तुम्हें फांसी के तख्ते पर चढ़ाया जाएगा।''

''बस यही हो सकता है, उग्रदण्ड महाराज! मैं कहीं नहीं जाऊँगा। अपना शेष जीवन आप के साथ रहकर बिताऊँगा।'' अंग रक्षक ने कहा।

तब तक सर हिलाते उनकी बातचीत सुननेवाला बधिक भल्लूक एक बार ऊँची आवाज़ में चिल्ला उठा-''भल्लूक मांत्रिक की जय!'' तब बोला-''तुम लोग यह नाहक़ चर्चा बंद कर दो। तुम लोगों को शीघ्र भल्लूक मांत्रिक का अपमान करनेवाले उदयगिरि के राजा दुर्मुख को पकड़ कर मेरे सामने हाज़िर करना होगा! ऐसा न करोगे तो तुम सबके सर काटकर इन जंगली बेलों से माला बनाकर अपने कंठ में धारण कर लूँगा।''

ये बातें सुन राक्षस उग्रदण्ड क्रोध में बोला, ''बधिक भल्लूक! क्या तुम अकेले इन सब के सर काटने की ताक़त रखते हो?''

बधिक भल्लूक क्रोध में अपना परशु उठाकर उग्रदण्ड से बोला, ''जानते हो, यह परशु भल्लूक महाराजा के वर का प्रसाद है। इसका सामना कोई नहीं कर सकता। लो, जाँच करके देखो, तुम अपने पत्थरवाले गदे से इसका सामना कर सकोगे या नहीं?'' इन शब्दों के साथ बधिक भल्लूक ने उग्रदण्ड की ओर एक क़दम बढ़ाया।

राक्षस उग्रदण्ड एक क़दम पीछे हटकर बोला,

''बधिक भल्लूक, तुम थोड़ा शांत हो जाओ। मैंने शायद तुम्हें पहले ही आगाह कर दिया है कि हम दोनों का परस्पर एक दूसरे का संहार करना यहाँ के इन नीच दुष्टों के लिए फ़ायदेमंद ही होगा!''

''यह बात तो सही है, पर राजा दुर्मुख के सर का क्या होगा? उसके बिना मैं भल्लूक के यहाँ कैसे जाऊँ?'' बधिक भल्लूक ने पूछा।

''उस राजा की हम सब लोग आस पास के जंगलों में खोज करेंगे। राज महलों और उद्यानों में विचरण करनेवाला वह कायर कमबख्त इस भयानक जंगल में अकेले कहीं नहीं जा सकेगा।'' उग्रदण्ड ने जवाब दिया।

इसके बाद सब लोग दुर्मुख के भाग जाने की दिशा की ओर बढ़े, तभी दूर से एक चीत्कार के साथ ये शब्द भी सुनाई दिये, ''अबे! जल्दी बाण

चलाओ! मैं उदयगिरि का राजा हूँ! मेरी जान बचाओगे तो तुम्हें आधा राज्य दे दूँगा।''

वह आवाज़ राजा दुर्मुख की थी। अंग रक्षक क्रोधित हो उस ओर दौड़ते हुए चिल्ला उठा, ''मुझे राजा दुर्मुख ने जो आधा राज्य देने का वचन दिया, वह राज्य किसी और को देने जा रहा है। मैं इसे सहन नहीं कर सकता।''

जब अंग रक्षक वहाँ पहुँचा तो वह देखता क्या है! एक ऊँचे वृक्ष की झुकी डाल पर राजा दुर्मुख रेंगता जा रहा है। उससे थोड़ी दूर हटकर एक चीता अपने दाढ़ फैलाकर गुर्राते हुए दुर्मुख की ओर बढ़ रहा है। पेड़ के नीचे एक जंगली युवक तीर का निशाना लगाये खड़ा है।

अंग रक्षक को देखते ही राजा दुर्मुख जोर से कराह उठा और बोला, ''अरे, मेरे अंग रक्षक! देखते क्या हो? इस चीते का मुझ पर हमला करने के पहले ही बाण चलाकर इसे मार डालो। तुम इस मूर्ख जंगली युवक से धनुष-बाण खींच लो।''

ये बातें सुन अंग रक्षक ने जरा भी विचलित हुए बिना पूछा, ''महाराज! क्या आप ने ही ये शब्द कहे थे कि चीते को मारने पर आधा राज्य दे देंगे?''
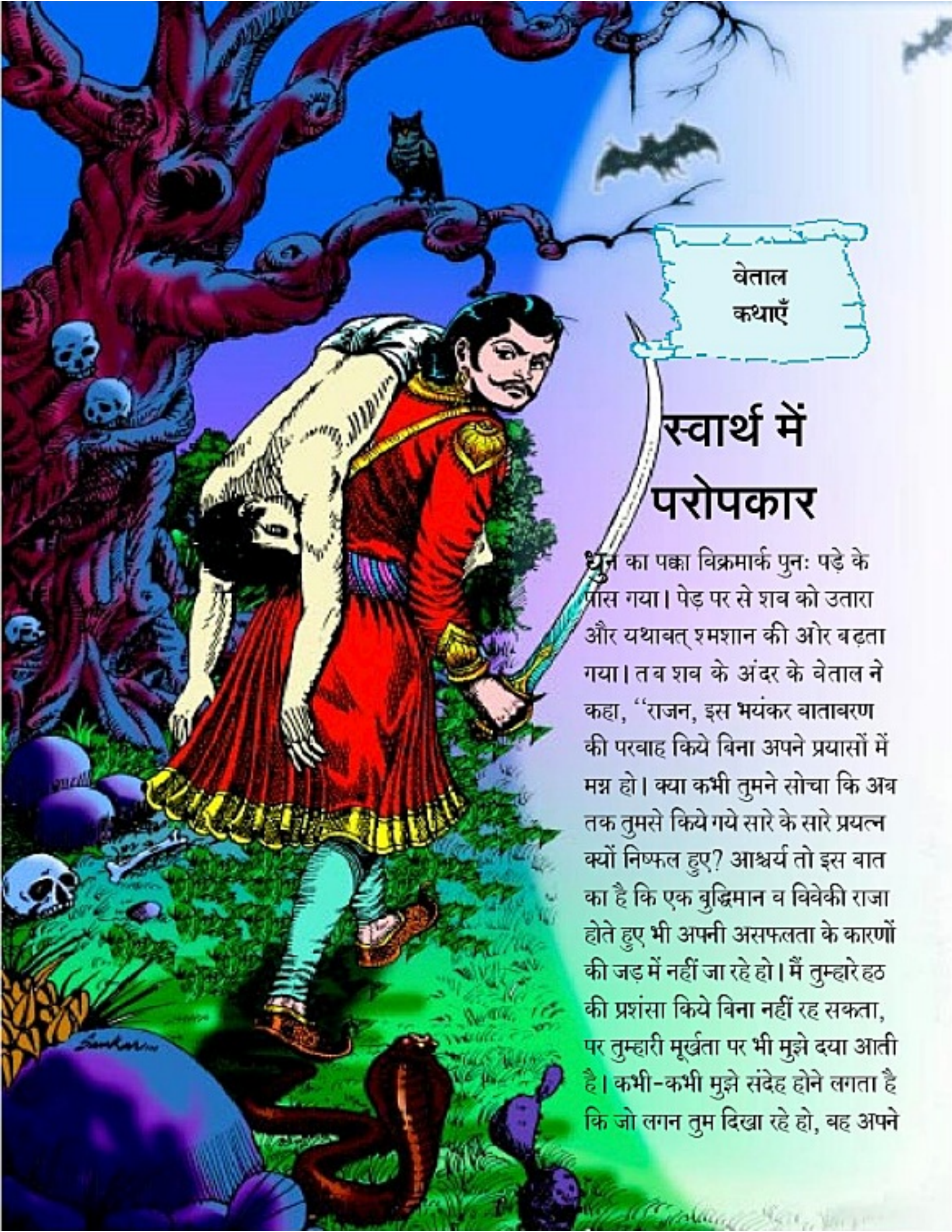
''हाँ, बे! मैंने ही कहे थे! मुझ पर हमला करने के पहले ही चीते को मार डालो।'' दुर्मुख चीत्कार कर उठा। ''महाराज! अगर आप हम दोनों को आधा-आधा राज्य दे बैठेंगे तो आप को बचेगा ही क्या?'' अंग रक्षक ने इतमीनान से पूछा।

''अबे! मुझे तो अपने प्राण बचाने हैं! प्राण! समझे!'' राजा ज़ोर से चिल्ला उठा।

जंगली युवक ने अपनी भोली दृष्टि दौड़ाकर एक बार राजा दुर्मुख और अंग रक्षक की ओर देखा, तब कहा, ''मुझे न राज्य चाहिए और न आधा राज्य ही। बस, पाँच सिक्के दिला दीजिए!'' यों कहते दुर्मुख पर हमला करनेवाले चीते पर निशाना लगाकर बाण चलाया।

बाण सीधे जाकर चीते की बगल में जा धंसा। चीता गरज उठा, पर उसके पंजे की मार से राजा दुर्मुख की पकड़ डाल से ढीली हो गई और वह नीचे जमीन पर गिर पड़ा उसके साथ चीता भी धम्म से नीचे जा गिरा। ***(और है)***

वेताल कथाएँ

स्वार्थ में परोपकार

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पड़े के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता गया। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन, इस भयंकर वातावरण की परवाह किये बिना अपने प्रयासों में मग्न हो। क्या कभी तुमने सोचा कि अब तक तुमसे किये गये सारे के सारे प्रयत्न क्यों निष्फल हुए? आश्चर्य तो इस बात का है कि एक बुद्धिमान व विवेकी राजा होते हुए भी अपनी असफलता के कारणों की जड़ में नहीं जा रहे हो। मैं तुम्हारे हठ की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता, पर तुम्हारी मूर्खता पर भी मुझे दया आती है। कभी-कभी मुझे संदेह होने लगता है कि जो लगन तुम दिखा रहे हो, वह अपने

स्वार्थ की पूर्ति के लिए है या परोपकार के उद्देश्य से। हम देखते रहते हैं कि कुछ संदर्भों में स्वार्थ और परोपकार के बीच के अंतर को जानना बहुत ही मुश्किल का काम है, क्योंकि इनके बीच का अंतर इतना महीन होता है कि हम उन्हें अलग नहीं कर पाते। उदाहरणस्वरूप मैं तुम्हें कमल की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। ध्यान से सुनो।'' फिर वेताल कमल की कहानी यों सुनाने लगाः

कोंडापुर नामक एक बड़े गाँव में पुरुषोत्तम नामक एक गृहस्थ रहता था। उसके दो बेटे थे। बड़े बेटे का नाम शेखर था। वह अपने पिता की ही तरह दूसरों की भलाई करता था। पर पुरुषोत्तम का दूसरा बेटा कमल स्वार्थी था। किसी की मदद करने से वह कतराता था। पुरुषोत्तम ने अपने दूसरे बेटे कमल को अच्छा बनाने का भरसक प्रयत्न किया, पर उसके प्रयत्न सफल नहीं हुए। मरने के पहले कमल को अपने पास बुलाकर पुरुषोत्तम ने उससे कहा, ''बेटे, इस गांव के लोग अच्छे हैं। यहाँ तुम रह नहीं सकते। अगर तुम सुखी जीवन बिताना चाहते हो तो मेरी एक सलाह है। पास ही के जंगल के बीच एक पर्वत है। उस पर्वत पर चढ़ोगे तो बीच में एक पाताल गुफ़ा है। उस गुफ़ा में अनन्त नामक एक साधु रहते हैं। तुम उनसे मिलोगे तो तुम्हारा भला होगा।'' यों कह चुकने के बाद वह मर गया।

कमल ने मन ही मन सोचा कि अपने बड़े भाई शेखर को पूरी संपत्ति सौंपने के उद्देश्य से ही पिता ने यह कहानी गढ़ी है। पर जब तक पिता का निधन नहीं हुआ तब तक उसे मालूम नहीं था कि अच्छाई ही उसकी एकमात्र संपत्ति है।

शेखर ने कमल से कहा, ''मेरे ही साथ रहो। मैं तुम्हारी अच्छी तरह से देखभाल करूँगा।''

कमल को लगा कि अब चिंता की कोई बात नहीं है, क्योंकि भाई ने उसके पालन-पोषण की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। कुछ ही दिनों में गांव के लोग कहने लगे कि भाई हो तो ऐसा, जो अपने छोटे भाई का इतना ख्याल रखता है। वे शेखर की तारीफ़ करने लगे और कमल की निंदा।

''तुम्हारे कहने पर ही मैं यहाँ रह रहा हूँ। पर इसके लिए लोग मुझे दोषी ठहरा रहे हैं, मेरा अपमान कर रहे हैं।'' कमल ने क्रोध-भरे स्वर में स्पष्ट कह डाला। इसपर शेखर ने हँसते हुए कहा, ''तुम किसी की मदद नहीं करते। अगर चाहते हो कि

लोग तुम्हारी प्रशंसा करें तो मेरी तरह तुम भी परोपकार करो, अच्छे मार्ग पर चलो।''

''दूसरों की भलाई करके पिताजी ने और तुमने क्या साध लिया? उस भलाई से मेरा क्या काम, जिससे एक कौड़ी भी जमा नहीं कर पाता। जीवन में बड़ा बनने की मेरी तीव्र इच्छा है। ऐसा कोई उपाय हो तो सुझाना,'' कमल ने कहा।

''संपत्ति जुटानी हो तो व्यापार करने की दक्षता चाहिये। कृषि अथवा ललित कलाओं में भी प्रवीणता चाहिये। मैं भी स्वयं ये सब नहीं जानता। तुम स्वयं धन कमाने के उपाय सोचो,'' शेखर ने सलाह दी।

धन कमाने की इच्छा तो भरी पड़ी है, पर उसे कमाने का कोई भी मार्ग कमल नहीं जानता। इसलिए पिता के कहे अनुसार वह पर्वत की पाताल गुफ़ा में गया और साधु अनन्त से मिला।

आनंद की बड़ी दाढ़ी थी और घनी मूंछें थीं। मुख मंडल पर तेजस्विता टपक रही थी। कमल ने अनायास ही उसे प्रणाम किया और कहा, ''स्वामी, मेरे पिताजी ने आपसे मिलने को कहा था। मैं समझता हूँ कि आप ही स्वामी अनन्त हैं।''

अनंत ने, उसके बारे में विवरण जानने के बाद कहा, ''हाँ, मैं ही अनंत हूँ। शीघ्र ही संपन्न बनने के लिए मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। पर, इस सहायता से, तुम्हें और मुझे कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।'' फिर अनंत ने अपने बारे में पूरे विवरण दिये।
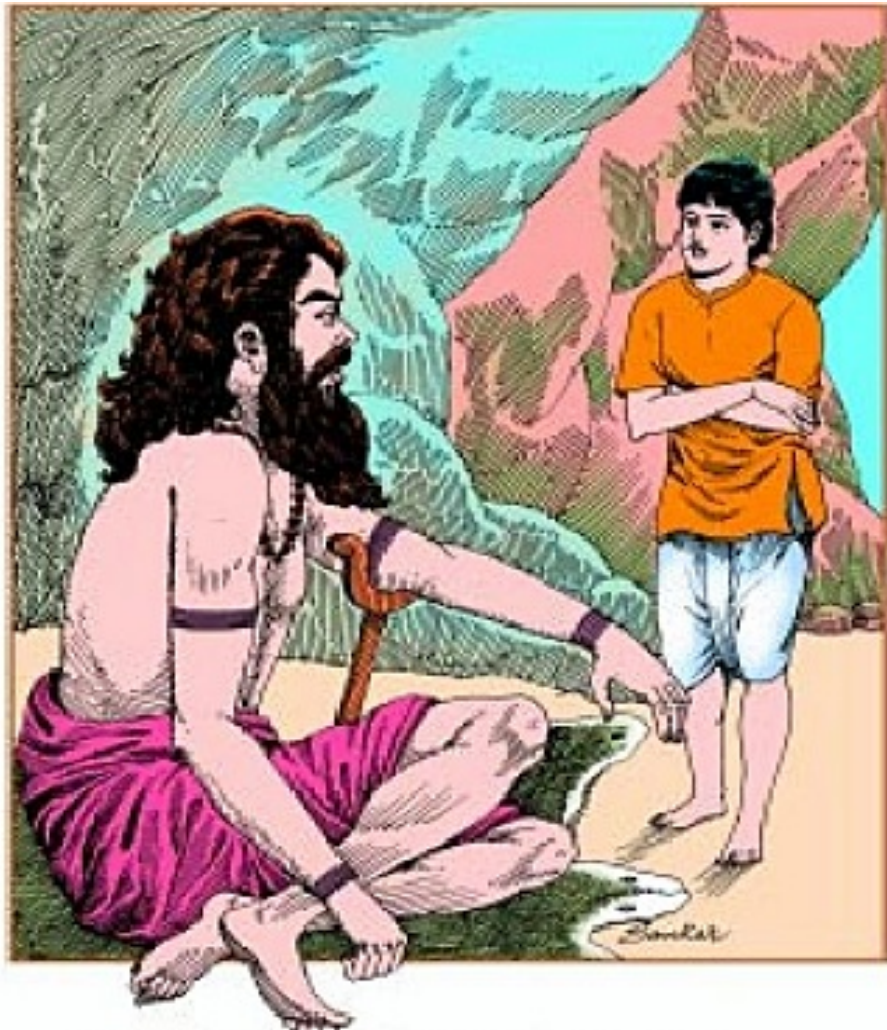
अनंत और कमल के पिता पुरुषोत्तम एक ही गांव में जन्मे और बड़े हुए। परोपकार ही पुरुषोत्तम का एकमात्र लक्ष्य था। पर अनंत में स्वार्थ आवश्यकता से अधिक ही था।

एक बार दोनों जब पास ही के गांव की ओर जा रहे थे तब उन्होंने एक साधु को देखा, जो सड़क के किनारे गिरा पड़ा था। उसके पाँव पर एक छोटा-सा घाव भी था। पुरुषोतम ने उसकी सहायता करनी चाही, पर अनंत ने मना किया। फिर भी उसकी बात पर ध्यान न देते हुए उसने पास ही के पौधों से कुछ पत्ते तोड़े और उसका रस साधु के घाव पर निचोड़ा।

साधु उठ बैठा और पुरुषोत्तम के कंधे को थपथपाते हुए कहा, ''बेटे, मेरे पास एक महिमावान तावीज़ है। जिसके पास यह हो, वह

जो भी चाहता है, उसे मिल जाता है। मैं तो साधु हूँ। इस तावीज़ से भला मेरा क्या काम? मैं इसे किसी योग्य व्यक्ति को सौंपना चाहता हूँ, इसलिए जान-बूझकर मैंने सांप के डंसने का नाटक किया। इस तावीज़ को लो और सुखी जीवन बिता।'' यह कहते हुए साधु ने उसे तावीज़ दे दिया।

पुरुषोत्तम ने हाथ जोड़कर कहा,''स्वामी, मैं साधु तो नहीं हूँ, पर मुझे इस तावीज़ की ज़रूरत नहीं है। आवश्यकता से अधिक धन दुख लाता है। आप इसे किसी और को दे दीजिये।''

साधु ने ''न'' के भाव में सिर हिलाते हुए कहा,''इस पल से तावीज़ तुम्हारा है। किसी योग्य व्यक्ति को चुनकर तुम ही उसे दे देना। अयोग्य को दोगे तो अनर्थ हो जायेगा।''
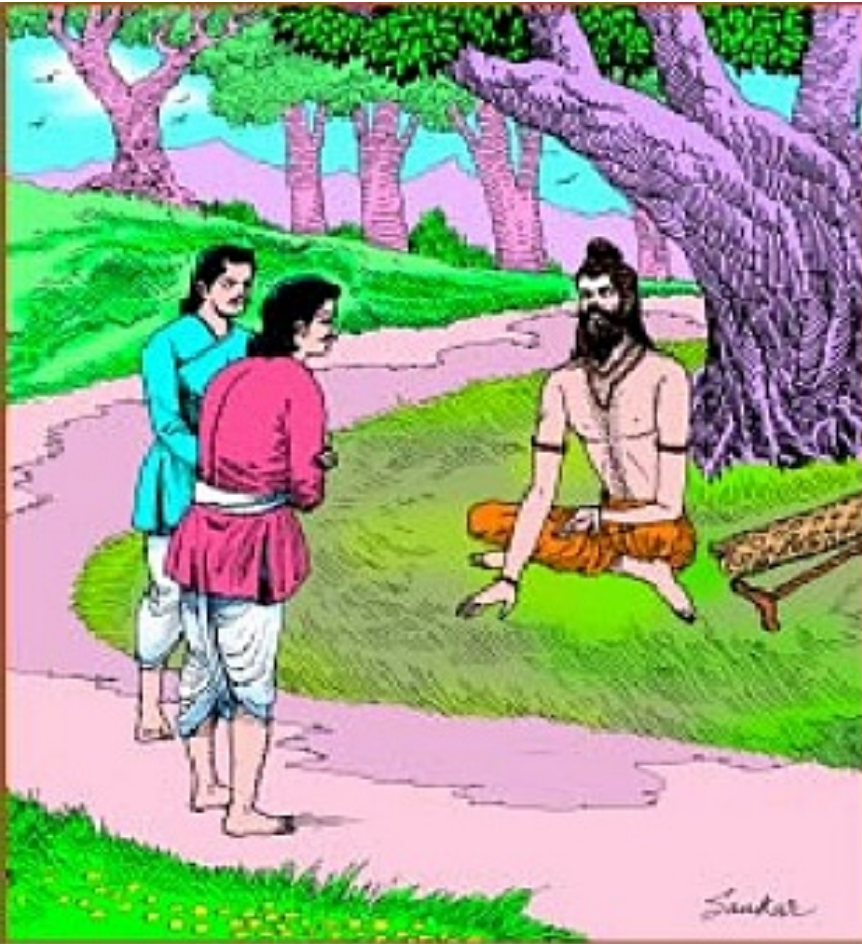
बग़ल में ही खड़ा अनंत चाहता था कि तावीज़ को अपना बना लूँ। इसलिए उसने कहा, ''स्वामी, अनर्थ क्या है और अयोग्य कौन होता है?''

साधु ने मुस्कुराते हुए कहा, ''कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिनकी समझ अनुभव के बाद ही होती है। मैंने कहा था न कि किसी अयोग्य के हाथ यह तावीज़ आ जाए तो अनर्थ होगा। इसलिए कोई भी दीर्घकाल तक इस तावीज़ को अपने पास नहीं रख सकता। किसी को भी दो, यह उसी प्रथम अयोग्य के पास पहुँच जाता है। तब उस प्रथम अयोग्य में जीवन-तेजस्विता कम हो जाती है और वह साधु बन जाता है, पर मोक्ष नहीं मिलता।''

साधु को सुनने के बाद पुरुषोत्तम ने अनंत से कहा, ''लगता है कि तुम यह तावीज़ अपनाना चाहते हो। तुम्हें इसे मैं सहर्ष देने को सन्नद्ध हूँ, क्योंकि मेरा विश्वास है कि तुम अयोग्य नहीं हो।'' यह कहते हुए उसने तावीज़ अनंत को दे दिया।

तावीज को अपना बना लेने के बाद अनंत जो भी मांगता था, उसे वह मिल जाता था। उसका हर काम सफल होता था। परंतु इससे जो आनंद मिलता था, उसे किसी के साथ बांटने के लिए वह बिलकुल ही तैयार नहीं होता था। इसीलिए लोग उसे ईर्ष्यालु कहते थे। एक साल के ख़त्म होने के पहले ही उसने वह तावीज़ किसी और को दिया। पर एक साल के अंदर ही वह तावीज़ उसे वापस मिल गया। जब चार बार ऐसा हुआ तो जीवन से वह विरक्त हो गया। क्रमशः उसका स्वास्थ्य भी बिगड़ता गया। रोशनी को देखने से

भी वह डरने लगा। इन परिस्थितिय ों में उसने संन्यास ले लिया और इस पाताल गुफ़ा में पहुँच गया।

अपने मित्र अनंत की इस दुस्थिति को देखकर पुरुषोत्तम को दुख हुआ। उसे लगने लगा कि उसके इस दुख का कारण मैं ही हूँ। वह एक बार पाताल गुफ़ा में जाकर उससे मिला और कहा, ''मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि वह तावीज़ तुम्हारी ऐसी दशा कर देगा। जब तक तुम्हें मोक्ष नहीं मिलेगा, तब तक मुझे भी मोक्ष प्राप्त नहीं होगा। इसलिए, उस तावीज़ से तुम मुक्त हो जाओ, इस दिशा में मैं भी प्रयत्न करूँगा।'' उसने वादा तो कर दिया, पर इतने ही में वह मर गया।

अनंत ने, तावीज़ से संबंधित सभी बातेंकमल को बतायीं और कहा, ''पुत्र, जब तक मुझे मुक्ति नहीं मिलेगी, तब तक मेरे जिगरी दोस्त और तुम्हारे पिता को भी मुक्ति नहीं मिलेगी। मेरी और अपनी मुक्ति के लिए तुम्हारे पिता ने तुम्हें यहाँ भेजा, पर तावीज़ का राज़ तुमसे छिपा रखा। अपने स्वार्थ के लिए मैं तुम्हें यह तावीज़ नहीं दे सकता इसलिए मैंने तुम्हें सच बता दिया। किसी भी हालत में इस तावीज़ को एक साल से अधिक समय तक अपने पास रख नहीं सकते। मैं नहीं चाहता कि यह तावीज तुम्हें दूँ और तुम परेशानियों से घिर जाओ। फिर इसे लौटाकर मुझे फिर से परेशान कर दोगे।''

तब कमल ने विनयपूर्वक कहा, ''मेरे पिताजी परोपकारी थे। उन्हें यह भी मालूम था कि मैं बड़ा

स्वार्थी हूँ। वे चाहते थे कि मेरे स्वार्थ में भी परोपकार का मिश्रण हो। यह उनका बड़प्पन है। मेरे पिताजी की आत्मा को और आपको मुक्ति मिल जाए, इसके लिए मेरा स्वार्थ उपयोग में आये तो इससे बढ़कर आनंद क्या हो सकता है। आप तावीज़ मुझे दे दीजिये। मैं वादा करता हूँ कि तावीज़ को शाश्वत रूप से अपने ही पास रखूँगा।''

अनंत ने कमल को आशीर्वाद देते हुए उसे तावीज़ दे दिया। तावीज़ के मिल जाने के बाद कमल ने जो भी काम किया, वह कामयाबुआ। पर अब कमल की व्यवहार-शैली में परिवर्तन हुआ। जो संपदा इस तावीज़ के कारण उसे मिली, उसका वह भोग करता रहा, पर साथ ही उनकी मदद भी करने लगा, जो कष्टों में फंसे हुए थे।

यों एक साल गुजर गया। इस एक ही साल के अंदर कमल ने पर्याप्त संपत्ति जुटा ली। वे संक्रांति

के दिन थे। प्रातःकाल ही अनंत गुफ़ा से बाहर आया और सीधे कमल के पास गया। उसने कहा, ''कमल, वह तावीज़ एक बार ज़रा मुझे देना।''

गले में लटकते हुए उस तावीज़ को कमल ने अनंत के हाथ में रख दिया। अनंत ने उसे उलट-पलट कर देखा और कमल से कहा, ''एकज़रूरी बात तुमसे कहने आया हूँ। तुम्हारे कारण तुम्हारे पिता की आत्मा को मुक्ति मिल गयी है। मुझे भी मुक्ति प्राप्त होनेवाली है। अब तुम्हें इस तावीज़ की कोई ज़रूरत नहीं है। दुर्भाग्यवश यह किसी अयोग्य के हाथ लग जायेगा तो कहानी की शुरुआत फिर से होगी।'' यह कहते हुए उसने तावीज़ को आग में फेंक दिया और वहाँ से चलता बना।

वेताल ने यह कहानी कह चुकने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, ''राजन, कमल के स्वार्थ ने परोपकार के लिए मार्ग प्रशस्त किया। तो क्या स्वार्थ प्रशंसनीय है? अनंत के आशीर्वाद से तावीज़ के दुष्ट प्रभावों का अंत हो गया न? मेरे संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''स्वार्थ प्रशंसनीय तो नहीं है। पर, उससे किसी को हानि नहीं पहुँचती हो तो स्वार्थ को ग़लत नहीं कह सकते। कमल स्वार्थी है, पर बुरा नहीं है। जो काम किया जाता है उसके प्रतिफल की वह आशा करता है। अब रही तावीज़ की बात। अनंत के आशीर्वाद से तावीज़ का दुष्ट प्रभाव नहीं मिटा। कमल के पिता की अच्छाई के कारण कमल में अच्छा परिवर्तन आया और इस परिवर्तन के कारण ही तावीज़ का दुष्ट प्रभाव मिट गया। उसने तावीज़ के दुष्ट प्रभाव को भी, अच्छा आदमी बनकर मिटा दिया। उसके द्वारा उसने संपत्ति जुटा ली और अपना जीवन-स्तर बढ़ा लिया। साथ ही उसने ज़रूरतमंद लोगों की मदद की और अच्छा नाम भी कमाया। उसने अपने स्वार्थ के लिए किसी को हानि नहीं पहुँचाई, बल्कि उससे परोपकार ही हुआ। यों कमल तावीज़ पाने के योग्य साबित हुआ।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार कमलेश की रचना)

कबूतर-डाक

हम सन्देश कैसे भेजते हैं? कोई भी बड़ी आसानी से सोच सकता है - पोस्ट, फोन, फैक्स, ई-मेल, तार, व्हायस-मेल तथा अन्य अत्यन्त आधुनिक साधन। हमलोगों ने निस्सन्देह सुना है और पढ़ा है कैसे सन्देश भेजने के लिए कबूतरों का उपयोग किया जाता था। क्या तुमने ऐसा तो नहीं सोचा कि कबूतर-डाक अप्रचलित हो गया है? नहीं, बिलकुल नहीं। उड़ीसा के कटक में एक छत पर पुलिस द्वारा एक हजार कबूतरों को सन्देश भेजने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जो अन्य थानों में, विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में सन्देश ले जाते हैं। ये कबूतर, जिनके पाँव में बंधे कैपसूल में सन्देश रहता है, उड़ कर गन्तव्य तक जाते हैं और उसी दिन उत्तर लेकर लौट आते हैं।

एक असामान्य शिव मन्दिर

लगभग सभी शिव मन्दिरों में प्रतिमा के रूप में शिवलिंग की पूजा की जाती है। हिमालय पर्वत पर स्थित अमरनाथ में शिव मन्दिर हिम लिंग के लिए प्रसिद्ध है, जो एक प्राकृतिक रचना है और जिसके दर्शनार्थ बर्ष के कुछ महीनों में तीर्थयात्रियों की भीड़ उमड़ पड़ती है, क्योंकि ऐसा विश्वास किया जाता है कि ग्रीष्म में हिमलिंग पिघल जाता है। एक मात्र मन्दिर ऐसा भी है जहाँ लिंगम की पूजा नहीं होती बल्कि नृत्य की मुद्रा में शिव के नटराज रूप की आराधना की जाती है। यह तमिलनाडु के चिदम्बरम में है। इस मन्दिर में भरत मुनि के 'नाट्य शास्त्र' में वर्णित १०८ नृत्य मुद्राएँ उत्कीर्णित हैं।

भारत की पौराणिक कथाएँ-२६

लालू सेठ ने चुना वरदान

वाराणसी की पावन नगरी में लालू सेठ नाम का एक महाजन रहता था। उसने अपने जीवन में कभी एक पैसे का भी दान नहीं किया। उसकी पत्नी मंगू बाई उसे बार-बार निकटस्थ स्थानों की तीर्थ यात्रा करने के लिए कहती रहती, किन्तु लालू उसे मुँहतोड़ जबाब देता, "भगबान शिव का अपमान करने का साहस कैसे तुम करती हो? क्या वे वाराणसी के अधिष्ठाता प्रभु नहीं हैं? यहाँ हजारों व्यक्ति तीर्थ यात्रा के लिए आते हैं; फिर हम तो यहाँ के निवासी हैं, हम क्यों बाहर जायें?"

बेचारी औरत अच्छी तरह जानती थी कि उसका पति अपने आराम पर भी कभी पैसा खर्च नहीं कर सकता।

भगवान शिव को निवेदित पावन रात शिबरात्रि की सुबह थी। सैकड़ों नर-नारी गंगा में डुबकी लगाने गये। "आओ, इस शुभ मुहूर्त में हमलोग भी गंगा-स्नान करते हैं!" मंगू बाई ने उसे उत्साहित करते हुए कहा।

"क्या मूर्खता की बात करती हो! क्या नहीं जानती कि घाट पर पहुँचते ही कोई न कोई ब्राह्मण टपक पड़ेगा और हमारे लिए प्रार्थना करने के बहाने पैसे मांगेगा।" लालू ने कहा।

पत्नी के हठ करने पर लालू इस शर्त पर राजी हुआ कि वे किसी ऐसे एकान्त स्थान पर जायेंगे जहाँ उन्हें कोई पुजारी न देखे।

क्योंकि सुबह-सुबह कोहरा छाया हुआ था, इसलिए उन्हें आसानी से एक ऐसा स्थान मिल गया जहाँ कोई अन्य व्यक्ति न था। जो भी हो, भगवान शिव और दुर्गा माँ सबसे अगोचर हो अपने भक्तों को निहार रहे थे। लोगों की भक्ति से प्रभावित होकर दुर्गा माँ ने पूछा, "इन भक्तों की भगवान

को पाने की अभीप्सा आप पूरी क्यों नहीं कर देते?'' भगवान ने समझाया कि इनमें वास्तव में ऐसी कोई अभीप्सा नहीं है। ये केवल बाह्य कर्मकाण्ड का पालन कर रहे हैं!

तभी भगवती माता की दृष्टि लालू और उसकी पत्नी पर पड़ गई। ''देखिये, यहाँ एक पावन व्यक्ति अपनी पत्नी को एक ऐसे शान्त स्थल पर ले जा रहा है जहाँ उनके ध्यान को कोई भंग न करे। क्या ये लोग भी दूसरों के समान हैं?'' शिव मुस्कुराये। फिर एक दीन पुजारी का भेष बदल कर लालू की ओर चल पड़े।

लालू पीछे घटते हुए बोला, ''मुझे तुम्हारी सहायता नहीं चाहिये। तुम मेरे लिए कोई मंत्र न पढ़ो। कृपया मुझे शान्ति से रहने दो।''

''घबराओ नहीं वत्स! तुम मुझे कम दे देना, केवल परम्परा के पालन के लिए। मेरी कोई माँग नहीं है।'' भगवान ने उसे विश्वास दिलाते हुए कहा। मंगूबाई ने भी अपने पति से पुजारी की बात मान जाने के लिए अनुनय-विनय किया।

''अच्छा, ठीक है! लेकिन मैं सिर्फ एक पैसा दूँगा। ज्यादा नहीं माँगना।'' लालू जोर देकर कहा।

''यह काफी है।'' भगवान ने कहा।

लालू और उसकी पत्नी ने स्नान किया और पुजारी ने उनके सिर पर हाथ रख कर उस अवसर के लिए उपयुक्त मंत्र का उच्चारण किया। फिर पुजारी ने दक्षिणा लेने के लिए अपना हाथ फैलाया।

''क्या मैंने ऐसा बचन दिया था कि मैं पैसा तुरन्त दे दूँगा? मैं अपने साथ पैसा नहीं लाया।'' लालू ने कहा।

''बहुत अच्छा! मैं तुम्हारे साथ घर तक चलता हूँ।'' भगबान ने कहा। भगबती दुर्गा भी अगोचर होकर उनके पीछे-पीछे चलीं। लालू घर

के अन्दर गया और कपड़े बदल कर बाहर सिर्फ यह कहने के लिए निकला कि अभी घर पर पैसा नहीं है, इसलिए कभी बाद में दे देगा।

शिव चले गये और दूसरे दिन अपना पैसा लेने के लिए फिर आ गये। लालू ने कुछ बहाना बना कर फिर टालमटोल कर दिया। शिव हर रोज आते रहे और लालू हर रोज कुछ न कुछ बहाना बनाता रहा। लालू को आशा थी कि पुजारी तंग आकर अपने आप ही आना बन्द कर देगा। लेकिन शिव अपनी दिनचर्या के कर्तव्य का पालन करते रहे।

लालू ने पुजारी के दृढ़ संकल्प को तोड़ने के लिए एक योजना बनाई। उसने अपने घर के निकट पुजारी को आते देख कर पत्नी को पुजारी से यह कहने का आदेश दिया कि उसके पति का अभी-अभी देहान्त हो गया है।

मंगू बाई यद्यपि इस बात पर बहुत दुखी हो

गई, फिर भी उसने लालू के निर्देश का पालन किया।

"आह! कितने दुख की बात है!" पुजारी ने शोक प्रकट करते हुए कहा। "पुत्री! स्वर्गवासी दयनीय पति अपने दाह-संस्कार पर पैसे खर्च करना नहीं चाहेगा। इसलिए उसके शरीर विसर्जन का कार्य मुझे करने दो, जिससे तुम पर कोई भार न पड़े। एक पुजारी के रूप में जहाँ एक ओर इस कार्य के लिए मैं सर्वथा उपयुक्त हूँ, दुसरी ओर उसकी आत्मा को यह देख कर शान्ति मिलेगी कि उसके दाह-संस्कार पर कोई पैसा खर्च नहीं हुआ।"

शिव यह कह कर घर के अन्दर घुस गये। लालू ने जमीन पर लेट कर मृत होने का बहाना किया। शिव ने उसे कन्धे पर उठाया और नदी तट की ओर चल पड़े। अभागिन मंगूबाई भी पीछे-पीछे चल पड़ी। लालू ने अब महसूस किया कि अब उसे रणनीति बदलनी होगी अन्यथा पुजारी उसे नदी में फेंक देगा।

वह पुजारी के कन्धे से सरक कर नीचे आ गया और एक लम्बी मुस्कान के साथ बोला, "मैं वास्तव में मर गया था, लेकिन आप निश्चय ही सच्चे निष्पाप ब्राह्मण हैं जिसके स्पर्श ने मुझे पुनर्जीवित कर दिया है। आप को बहुत-बहुत धन्यवाद।"

भगवान शिव, जो करुणा के लिए प्रसिद्ध हैं, अपने सच्चे रूप में प्रकट होकर बोले, "वत्स, मैं तुम्हारी, धन को सुरक्षित रखने की दुराग्रही बुद्धि और अध्यवसाय से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम्हें इस दुराग्रह के गुण को आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर मोड़ देना चाहिये। अब तुम मुझसे एक वरदान माँग सकते हो।"

लालू ने हाथ जोड़ कर कहा, "कृपया आप को जो एक पैसा मुझे दान में देना है, उसे माफ कर दीजिये।"

एक विचित्र मुस्कान शिव के मुखमण्डल पर फैल गई। उन्होंने अगोचर दुर्गा की ओर एक अर्थ भरी दृष्टि से देखा। फिर लालू की ओर मुड़ कर कहा, "एवम अस्तु!" इतना कहकर वे अन्तर्धान हो गये।

दुर्गामाता उदासीन हो गईं।

"हमें प्रतीक्षा करनी होगी", भगवान ने कहा, "जब तक अपनी वास्तविक आवश्यकता का सच्चा ज्ञान मनुष्य की चेतना में नहीं उतरता। हम किसी को कुछ ऐसी च ीज नहीं दे सकते जिसके लिए उसमें माँग नहीं है।"

समाचार झलक

एक 'रेकार्ड' सभा

"गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स" के विपरीत "लिमका बुक" भारत में व्यक्तियों तथा संस्थाओं तक सीमित है। हाल में दिल्ली में एक अनोखी सभा आयोजित की गई जब लगभग ३० भारतीयों ने, जो उपरोक्त किसी एक रेकार्ड बुक में प्रवेश पा चुके थे, अपनी दक्षता अथवा प्रतिभा का प्रदर्शन किया, यद्यपि यह किसी नये रेकार्ड बनाने के उद्देश्य से नहीं किया गया था। वहाँ उपस्थित लोगों में विजयवाडा निवासी शेशू बाबू गिनिज बुक में प्रवेश पाने के लिए ३० घण्टे १० मिनट तक निश्चल खड़ा रहा।

सभा के अधिकांश भाग तक वह बिना हिले-डुले शान्त खड़ा था। भारत गौरव नाम की इस सभा के आयोजकों ने बताया कि शारीरिक सहनशीलता और मानसिक क्षमता की सीमा को पार करनेवाले इन प्रदर्शकारियों के करतबों को देखने का मौका जीवन में कभी-कभार ही आता है।

दंतशक्ति

एक मलेशियाई भारतीय बी.राधाकृष्णन ने अपने दांतों से रेल के छ डब्बों को, जिनमें से प्रत्येक का वजन २६० टन था, ४ मीटर (१५ फुट) की दूरी तक खींचा। कुआला लम्पुर में आयोजित इस घटना के प्रत्यक्षदर्शियों में थे उस समय के प्रधान मंत्री मि.महातिर मुहम्मद। वह ३७ वर्षीय युवक अब "गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड्स" में प्रवेश पाने की प्रतीक्षा कर रहा है।

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता
सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

सोनपुर-निवासियों ने एक मन्दिर का निर्माण किया और भगवान की दैनिक पूजा के लिए एक पुजारी को बहाल किया।

पुजारी लालची था। वह जानता था कि ग्रामवासी भगवान के गहरे भक्त हैं। उसने उनकी भक्ति से लाभ उठाने और अपने लिए उनसे कुछ ऐंठने की योजना बनाई।

एक दिन वह मन्दिर में काम पर नहीं आया। दोपहर में विलम्ब से ग्राम के प्रमुख व्यक्ति उसके पास यह पता करने गये कि बात क्या है।

"विगत रात्रि में भगवान मेरे समक्ष प्रकट हुए और बोले कि 'मैं अपने पुजारी को मामूली वस्त्र में देखना पसन्द नहीं करता। यदि तुम मुझे प्रसन्न रखना चाहते हो तो तुम्हें रेशमी वस्त्र और स्वर्ण चेन धारण करना होगा।' भगवान का यह आदेश है।' ' पुजारी ने कहा।

ग्रामीणों ने एक सभा बुलाई और कुछ निर्णय लिये।

- क्या ग्रामीण पुजारी का वेतन बढ़ाने का निर्णय लेते हैं जिससे वह मँहगे वस्त्र और आभूषण खरीद सके।
- क्या ग्रामीण पुजारी को यह सलाह देते हैं कि वह पूजा करना जारी रखे और भगवान के अगले आदेश की प्रतीक्षा करे।
- क्या ग्रामीण दूसरा पुजारी रखने का निर्णय लेते हैं?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में लिख कर एक समुचित शीर्षक के साथ भेज दो। साथ में निम्नलिखित कूपन भी भर कर भेज दो। लिफाफे पर "पढ़ो और अप नी प्रतिक्रिया दो" लिखा होना चाहिये।

अन्तिम तिथिः ३० जून २००४

नाम ----------------------------------उम्र-----------जन्मतिथि--------------------

विद्यालय --कक्षा-----------

घर का पता--

---पिनकोड--------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर **प्रतियोगी के हस्ताक्षर**

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

THE ADVENTURES OF G-man

खतरनाक टापू पर पिकनिक
भाग ।

प्रस्तुतकर्ता

POWER SUPPLY

SURYARAJ
उस दिन भारतीय सेना की 4 थी रेजिमेंट का जवान लड़ रहा था अपनी आखिरी जंग.
हिमालय में शत्रुओं पर हमला करने के लिए वह डटा रहा.
इस जंग में सिर्फ मेजर सूर्यराज ही जिंदा बचा...
अकेला.
घायल.
थका-हारा
और ठंड से ठिठुरता.
उसके पास बचा था बस इमर्जेंसी के लिए रखा हुआ पारले-जी बिस्किट और जीने का हौसला.
अब उसे लड़ना था एक नए शत्रु से . . .
अपने हालातों से.
दो हफ्ते बाद.
सूर्यराज के बिस्किट खत्म हो गये...
और जीने की उम्मीद भी.
अब वह अपनी अंतिम घड़ियां गिन रहा था.

हां पर मेजर सूर्यराज पर दूसरे ग्रह
से आए गोलाकार चक्र (ओर्ब)
ने अनेक तरह के परीक्षण किए.
क्या यह वही है जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने बताया था ?
क्या इसकी आत्मा पवित्र है ?
क्या इसका दिल मजबूत है ?
क्या यह पृथ्वी पर दुष्टों की तबाही का जवाब होगा ?
क्या यह वही है जो इन महान कार्यों को अंजाम देगा ?
क्या यह अच्छे कामों के लिए लड़ेगा ?
शायद यह वही है...
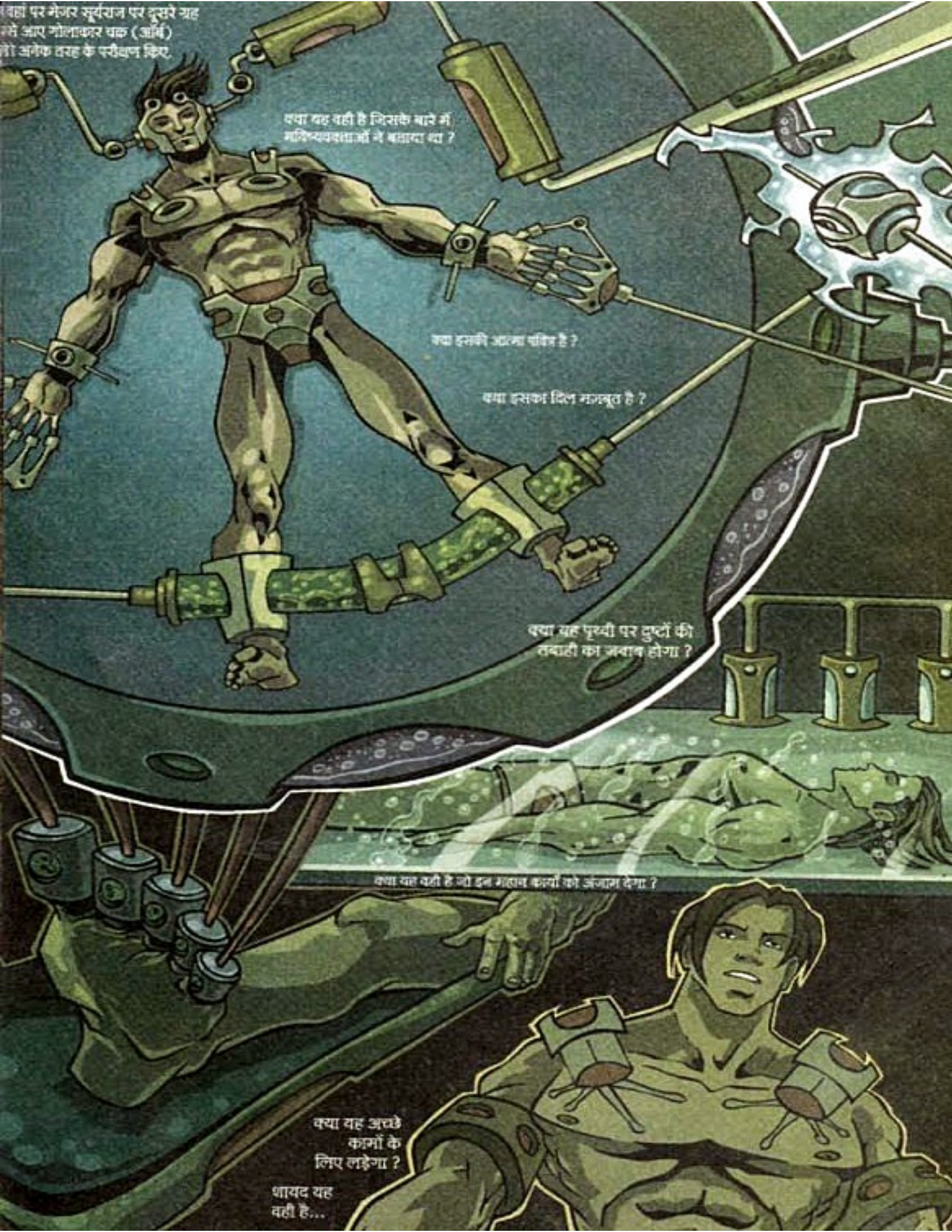
G-man
शैतानों का विनाशक
यह है एक महाशक्ति, जिसे पृथ्वी की सुरक्षा के लिए दूसरे ग्रह में बनाया. एकमात्र शक्ति जो नुकसान पहुंचानेवाले लालची, क्रूर, निर्दयी व दुष्ट लोगों से ममतामयी धरती मां की रक्षा करती है.
ऑर्ब
आखिरकार गोलाकार चक्र (ऑर्ब) की सदियों पुरान
खोज खत्म हुई. उसे मिला एक नया मकसद-दुष्टात्मा
के खिलाफ जी-मैन की जंग में उसकी मदद, मार्गदर्शन करना
और हौसला बढ़ाना

ज़रा देखो तो दिन-ब-दिन कौन बूढ़ा हो रहा है. सफ़ेद बाल... बुड्ढा कहीं का!
KRASSH
हा! हा! हा! बूढ़े शेख. इस तरह से तुम वक्त को नहीं रोक सकते.

बदलतीजा आईने,
मैं रहूंगा हमेशा
जवान...

KHEHEHEHEHEHE

टेरोलीन एक पावरप्लांट बनाता है. एक विशालकाय मशीन जो बच्चों के शरीर की ऊर्जा को निकालकर टेरोलीन के शरीर में डाल देगी, ताकि वह रहे हमेशा जवान.
अपने पावरप्लांट में पावर भरने के लिए मुझे बच्चे चाहिए. अब मेरा मुंह मत देखो! जाओ!!
मैंने जो प्लान बनाया है उससे बॉस ज़रूर खुश होगा.

कहीं किसी रोज पश्चिमी घाट पर...
एक बस सरपट दौड़े जा रही थी खंडाला - एक खूबसूरत हिल स्टेशन
बच्चों की स्कूल पिकनिक जा रही थी.
राहुल, खिड़की के बाहर हाथ मत डालो.
अचानक...
THOOOMMM
बस जोरों से हिलने लगी.
शायद भूकंप आया है... या फिर चट्टानें खिसक रही हैं.
ड्राइवर का बस से नियंत्रण छूट जाता है.

हेलिकॉप्टर ने इलेक्ट्रोमैग्नेटिक पावर की मदद
बस को सड़क से ही उठा लिया.
वाइल्डड्रॉन हम आ रहे हैं।
आपका प्लान बहुत बढ़िया था बॉस!
टैक्नोलीन जरूर मुझे शाबाशी देगा.
अब चलें बड़ी खतरनाक दुनिया में.
बच्चों की बस को हिंद महासागर के एक गुप्त टापू पर ले जाता है.
क्या ये बच्चे फिर से हंसते-खेलते नज़र आएंगे? क्या जी-मैन इन्हें बचा पाएगा
जानने के लिए भाग II देखिए.

मुसाफ़िर

राजेंद्रपुरी राज्य की सरहदों पर एक उजड़ी सराय थी। लगातार बरसती बारिश से बचने के लिए चार मुसाफ़िर उस सराय में एक-एक करके आये। इन चारों में से दो युवक थे। तीसरा वृद्ध साधु था, जिसकी लंबी सफ़ेद दाढ़ी थी। एक युवक था, जिसे देखते हुए लगता था कि वह आवारा है।

नींद न आने के कारण वे दोनों युवक आपस में बातें कर रहे थे। वृद्ध साधु बरसती बारिश को देखते हुए अपने आप कुछ गुनगुना रहा था। आवारा दीवार से सटकर पाँव फैलाकर बैठ गया और झपकी लेने लगा।

दोनों युवकों ने एक-दूसरे से पूछकर नाम जान लिया। एक का नाम सुनंद था तो दूसरे का नाम था आनंद।

''तुम कहाँ के हो। किस काम पर जा रहे हो?'' सुनंद ने पूछा। ''पड़ोसी राज्य के राघवेन्द्रपुर गाँव का हूँ। मैं शिक्षित हूँ। परन्तु हमारे राज्य में मुझे एक छोटी-सी भी नौकरी नहींमिली। वहाँ उन्हीं लोगोंको नौकरियाँ मिल रही हैं, जिनके रिश्तेदार बड़े-बड़े ओहदों पर हैं। नहीं तो छोटी नौकरी के लिए भी बड़ी रक़म चुकानी पड़ती है। पर मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। सुनने में आया कि राजेंद्रपुरी में योग्यता के अनुसार नौकरियाँ उपलब्ध होती हैं। इसीलिए इतनी दूर चला आया। संस्कृत और गणित शास्त्र में भी मैं प्रवीण हूँ। इस आशा को लेकर आया हूँ कि किसी विद्यालय में अध्यापक की नौकरी मिल जायेगी। तुमने तो अपने बारे में कुछ नहीं बताया।'' आनंद ने पूछा।

इसपर सुनंद ने फीकी हँसी हँसते हुए कहा, ''हाँ, किसी ने ठीक ही कहा है कि दूर के पहाड़ चिकने होते हैं। हम दोनों की हालत कुछ ऐसी ही है। मैं राजेंद्रपुरी का ही निवासी हूँ। जिस प्रकार की परिस्थितियाँ तुम्हारे राज्य में हैं, उसी प्रकार की परिस्थितियाँ यहाँ भी हैं। खड्ग युद्ध में और घुड़सवारी में मैं दक्ष हूँ। परंतु मुझे एक साधारण

सिपाही की भी नौकरी नहीं मिली। मैं रिश्वत देने की स्थिति में नहीं हूँ, इसी कारण मुझे नौकरी नहीं मिल रही है। तुम्हारे राज्य की प्रशंसा सुनी। सुना कि वहाँ योग्य लोगों को आसानी से नौकरी मिल जाती है। इसीलिए वहीं जाने निकल पड़ा। हम दोनों की बातों से लगता है कि कोई हमसे झूठ बोल रहा है और हमें गुमराह कर रहा है।''

''हमारे दोनों राज्यों में यह झूठा प्रचार कौन कर रहा है, समझ में नहीं आ रहा है।'' आनंद ने कहा।

वृद्ध साधु दोनों युवकों की बातचीत सुन रहा था। उसने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''मैं जानता हूँ। सुनो। मैंने कई राज्यों में भ्रमण किया। जिस अनीति अन्याय के बारे में आप कह रहे हैं, वे लगभग सभी राज्यों में व्याप्त हैं। सुशासन और प्रजाक्षेम किसी एक राजा मात्र से संभव नही है। इसके लिए उन-उन राज्यों के मंत्रियों, सेनाधिपतियों, कोषाधिकारियों जैसे उच्च अधिकारियों का सहयोग चाहिये। राजा कितना भी बड़ा और अच्छा क्यों न हो,कुछ कर नहीं पायेगा। अपने राजा को संतुष्ट करने के लिए, और अपना उल्लू सीधा करने के लिए वे पदाधिकारी प्रचार करते रहते हैं कि राज्य में सुशासन चल रहा है, वहाँ के लोग सुख-शांति के साथ रह रहे हैं। ऐसा प्रचार करने पर पड़ोसी राज्य के राजा के आक्रमण से भी वे बच सकते हैं। इस प्रचार के पीछे उनका स्वार्थ है, उनकी कुत्सित मनोभावना है। ऐसा झूठा प्रचार करके वे राजा को भी अकर्मण्य बना डालते हैं।'' दोनों युवकों ने साधु से पूछा, ''क्या इस दुस्थिति में परिवर्तन की क्या कोई संभावना नहीं है?''

'है। पुराने ज़माने में राजा जनता का कुशल-मंगल ही अपना लक्ष्य व कर्तव्य मानते थे। वे अक़्सर बहुरूपिया बनकर देश में घूमते रहते थे। राज्य की समस्याओं से परिचित होते थे। जनता के दुख-दर्द को दूर करते थे। पर अब ऐसा नहीं हो रहा है। इसीलिए स्वार्थी अधिकारी मनमाना कर रहे हैं। उस ज़माने में राजा जिन कर्तव्यों का पालन करते थे, अब तुम जैसे युवकों को करना चाहिये। जनता को संगठित करो, शासकों से खुद मिलो, राज्य की समस्याओं पर प्रकाश डालो और राजा का ध्यान उसके कर्तव्य की ओर

खींचो। राजा अच्छे स्वभाव का हो, वह अगर प्रजा को चाहता हो, जनता क्षेम ही उसका लक्ष्य हो तो परिस्थितियाँ बदलेंगी।'' साधु ने उन्हें उत्साहित करते हुए कहा।

दीवार से सटकर बैठा आवारा भी उनकी इन बातों को ध्यान से सुन रहा था। वह अचानक तीनों के बीच में आकर बैठ गया और कहने लगा, ''महाशयो, मैंने आपकी सब बातें सुन लीं। परिस्थितियों में शीघ्र ही परिवर्तन हो, इसके लिए आवश्यक क़दम उठा ऊँगा।'' फिर सुनंद को संबोधित करते हुए उसने कहा, 'सुनंद, राजेंद्रपुरी में ही तुम्हें अच्छी नौकरी मिले, इसका मैं प्रबंध करूँगा। साथ ही मैं कोशिश करूँगा कि आनंद को राघवेंद्रपुर में उसकी योग्यता के अनुरूप नौकरी मिले। वहाँ का राजा मेरा अच्छा दोस्त है।''

दोनों युवकों ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा, ''आपने तो बताया ही नहीं कि आप महाशय कौन हैं?''

आवारा मुस्कुराता हुआ उठा और कहा, ''मैं राजेंद्रपुरी का युवराज रवितेज वर्मा हूँ। शीघ्र ही मेरा राज्याभिषेक संपन्न होनेवाला है। सिंहासन पर आसीन होने के पहले राज्य की स्थिति को स्वयं जानने के लिए बहुरूपिया बनकर यों भटकता आ रहा हूँ।'' कहते हुए उसने पगड़ी उतारी तथा मूछ और दाढ़ी निकाल दी।

युवक सन्नाटे में आ गये और हाथ जोड़कर युवराज को प्रणाम किया। युवराज ने प्रणाम करते हुए साधु से कहा, ''राज्य में अनीति पर रोक लगानी हो तो यह केवल राजा मात्र से मुमकिन नहीं हो सकता। अधिकारियों का भी धर्मबद्ध होना आवश्यक है। जनता को भी चौकन्ना रहना चाहिये। जनता की स्थिति को जानने के लिए राजा को निरंतर प्रयत्न करते रहना चाहिये, आदि आपने जो सलाहें दीं, बहुत ही उत्तम हैं। इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। राजधानी में संपन्न होनेवाले मेरे राज्याभिषेक उत्सव में भाग लेने आप अवश्य पधारें और मुझे आशीर्वाद दें। आपसे मेरी यह सविनय विनती है।''

साधु ने मुस्कुराते हुए ''हाँ'' के भाव में सिर हिलाया और हाथ उठाकर उसे आशीर्वाद दिया।

रिश्वतखोर

ब्रह्मदत्त के शासन-काल में बोधिसत्व काशी राज्य का क्रयाधिकारी था।

बोधिसत्व काशी राज्य के लिए आवश्यक हाथियों, घोड़ों और चांदी के सिक्कों की परख करता था, उनका मूल्य आंकता था और उन्हें बेचने आये मालिकों को रक़म चुकाता था।

चूँकि राजा ब्रह्मदत्त बड़ा ही लोभी था, इसलिए बोधिसत्व की ईमानदारी पर उसे शक थ। लोग उससे कहा करते थे कि वह जो भी वस्तु खरीदता है, उसके लिए वह आवश्यकता से अधिक रक़म चुकाता है। राजा को ये बातें सच लगने लगीं। उसे लगा कि इसपर रोक नहीं लगायी तो खज़ाना खाली हो जायेगा।

एक दिन राजा ने खिडकियाँ खोलीं तो देखा कि एक आदमी कड़ी धूप में उद्यानवन के पेड़ों को पानी दे रहा है। उसकी मेहनत को देखते हुए राजा ने सोचा, ''वाह, यह आदमी बड़ा ही विश्वासपात्र है, नहीं तो भला क्योंकर इस कड़ी धूप में इतनी मेहनत करेगा।''

दूसरे ही दिन राजा ने उस बागबान को बोधिसत्व के स्थान पर क्रयाधिकारी नियुक्त किया। राजा को उम्मीद थी कि यह नया पदाधिकारी चतुरता से पेश आयेगा और इससे उसे लाभ होगा। परंतु वास्तव में यह नया क्रयाधिकारी बुरी नीयत का था, उसमें थोड़ा-सा भी विवेक नहीं था। वह न तो वस्तु तत्व को जानता था, न ही उसके मूल्य को। इस वजह से जब वह हाथियों, घोड़ों या वस्तुओं को खरीदता था, बिना सोचे-बिचारे ही उनका दाम मुकर्रर करता था और उनके मालिकों से कुछ भी सुनने से साफ़-साफ़ इनकार कर देता था।

मालिक कुछ कहे बिना चुप रह जाते थे। नुक़सान उठाने के अलावा कोई और चारा नहीं था। जो रक़म उन्हें दी जाती थी, वे चुपचाप ले

लेते थे। उन्हें यह कहने से डर लगता था कि उनके साथ अन्याय हुआ है और क्रयाधिकारी के अन्यायपूर्ण निर्णय के कारण उन्हें नुक़सान उठाना पड़ा है।

एक दिन सुदूर उत्तर से एक अश्व व्यापारी अच्छी नस्ल के पाँच सौ अश्व के साथ आया। वह सीधे राजा से मिला, पर राजा ने अश्वों को खरीदने का काम क्रयाधिकारी को सौंपा।

क्रयाधिकारी ने घोड़ों को देखा और कहा, ''बहुत सोचने के बाद भी लगता है कि इनका दाम मटके भर के चावल से अधिक नहीं होगा। उसने सैनिकों को हुक्म दिया कि इनके मालिक को मटके भर का चावल दे दो और घोड़ों को अस्तबल में बांध दो।

घोड़ों का व्यापारी क्रयाधिकारी के निर्णय को सुनकर हक्का-बक्का रह गया। पर अन्य व्यापारियों की तरह वह चुप नहीं रहा। वह सीधे पुराने क्रयाधिकारी बोधिसत्व के पास गया और अपना दुखड़ा सुनाया।

बोधिसत्व ने पूरा विवरण जानने के बाद उस व्यापारी से कहा, ''आप एक काम कीजिये। इस नये क्रयाधिकारी को संतुष्ट करने के लिए पहले उसे रिश्वत दीजिये।

फिर उससे कहिये, 'आपने मेरे घोड़ों का जो मूल्य निर्धारित किया, वह न्यायसंगत है। पर भरी सभा में क्या आप राजा के समक्ष बता सकते हैं कि इस मटके भर के चावल का क्या दाम है?' अगर क्रयाधिकारी यह बताने को तैयार हो तो

उसे कल राजा के दरबार में ले आइये। उस समय मैं वहीं उपस्थित रहूँगा और देखूँगा कि आपके साथ न्याय हो।''

बोधिसत्व के कहे अनुसार वह अश्व व्यापारी क्रयाधिकारी के पास गया और रिश्वत के रूप में धन दिया। वह दरबार में आने और मटके भर के चावल का दाम बताने को तैयार हो गया। उसने बहुत खुश होते हुए व्यापारी से कहा, ''ज़रूर आऊँगा। मटके भर के चावल का दाम बताना थोड़े ही मुश्किल का काम है।''

दूसरे दिन दरबार मंत्रियों, मुख्य कर्मचारियों, सेनाध्यक्षों से खचाखच भरा हुआ था। राजा की अनुमति पाकर बोधिसत्व भी वहाँ आया।

दुखी अश्वव्यापारी ने राजा से कहा, ''प्रभु, आपके नये क्रयाधिकारी ने मेरे पांच सौ अश्वों का मूल्य निर्धारित किया है, मटके भर का चावल।

मैं जानना चाहूँगा कि मटके भर के इस चावल का दाम कितना है?''

उस क्षण तक राजा को यह मालूम नहीं था कि आख़िर हुआ क्या? इसलिए आश्चर्य प्रकट करते हुए उसने क्रयाधिकारी से पूछा, ''पाँच सौ अश्वों का मूल्य कितना निर्धारित किया?''

''मटके भर का चावल प्रभु'' क्रयाधिकारी ने निस्संकोच कह डाला।

''ठीक है, पाँच सौ अश्वों का मूल्य अगर मटके भर का चावल हो तो उस मटके भर के चावल का मूल्य कितना है?'' राजा ने पूछा।

क्रयाधिकारी ने बिना सकपकाये कहा, ''मटके भर के चावल का मूल्य उतना ही है, जितना, काशी राज्य और पड़ोस के सामंत राज्यों को मिलाकर उनका मूल्य होता है।''

उसके इस अटपटे जवाब को सुनकर दरबार में उपस्थित सबके सब ठठाकर हँसने लगे व तालियाँ बजाने लगे,वे यह भी भूल गये कि हम दरबार में हैं जहाँ ऐसी चेष्टायें कदापि उचित हीं।

दरबार में उपस्थित प्रमुखों में से एक प्रमुख ने नये क्रयाधिकारी से कहा, ''इतने लंबे अर्से से हम समझ रहे थे कि राज्य का मूल्य आंकना असंभव है। लेकिन अभी-अभी हमें मालूम हुआ कि पूरे काशी राज्य का मूल्य केवल मटके भर के चावल के बराबर है। वाह, तुम्हारी अक्लमंदी की दाद देनी ही होगी। बहुत बड़े विवेकी हो।'' यों उसने उसकी हँसी उड़ायी।

तब बोधिसत्व ने कहा, ''इस क्रयाधिकारी के कथन में सत्य है। इसका मज़ाक मत उड़ाइये। उसने कहा कि पांच सौ अश्वों का दाम मटके भर के चावल के मूल्य के बराबर है। और मटके भर के चावल का दाम काशी राज्य और सामंत राज्यों को मिलाकर उनका जितना मूल्य होता है, उतना है। इसलिए क्रयाधिकारी ने अश्वों का जो दाम ठहराया, वह समुचित लगता है।''

बोधिसत्व की बातों पर सबको आश्चर्य हुआ। तहक़ीकात करने पर राजा को पूरा विषय मालूम पड़ गया। उसने अपनी ग़लती जान ली और रिश्वतखोर को उस पद से हटाकर फिर से बोधिसत्व को उस पद पर नियुक्त किया।

विष्णु पुराण

हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद का आलिंगन करके कहा, "प्रह्लाद, तुम्हारी वजह से इतने साल बाद मुझे विष्णु के साथ लड़ने का मौका मिल गया है।" यों कहते गदा उठाकर नरसिंहावतार के साथ लड़ने को तैयार हो गया। नृसिंह ने प्रलय गर्जन करते हुए उछल कर हिरण्य कश्यप को पकड़ लिया और उस को सभा भवन के द्वार तक ले गये। इसके बाद अन्दर व बाहर से अतीत द्वार के चतूबरे पर, रात व दिन से परे संध्या के समय, आकाश व पृथ्वी से भिन्न अपनी जाँघों पर रखकर, अस्त्र-शस्त्र से परे अपने नाखूनों से उन्होंने ब्रह्मा से प्राप्त सभी वरदानों से भिन्न हिरण्यकश्यप को पेट फाड़कर मार डाला।

नृसिंह ने प्रह्लाद को अपने पिता की अंत्येष्टि क्रिया करने तथा राज्य सूत्र को संभालने का आदेश दिया। फिर उसको आशीर्वाद देकर नृसिंह अवतार विष्णु अंतर्धान हो गये। इस प्रकार जय और विजय का पहला जन्म समाप्त हो गया।

विष्णु के आदेशानुसार प्रह्लाद ने चिरकाल तक राज्य-शासन किया और इसके बाद अपने पुत्र विरोचन को गद्दी पर बिठा कर वह विष्णु भक्ति से प्रेरित होकर जंगलों में चला गया।

विरोचन के बाद उसका पुत्र बलि गद्दी पर बैठा। क्षीरसागर के मंथन के समय उच्चैश्रवा नामक जो घोड़ा पैदा हुआ था, उस पर बलि ने अधिकार कर लिया। राक्षसों के शिल्पी मय ने उसके लिए थल, जल व गगन में विचरण कर सकनेवाला वाहन बना कर दिया।

अमृत की प्राप्ति में राक्षसों के साथ जो अन्याय हुआ, उसका बदला लेने के विचार से बलि

६. त्रिविक्रम वामनावतार

देवताओं के साथ लड़ने को तैयार हो गया। देवताओं ने अमृत का सेवन किया था, इसलिए बड़े ही उत्साह के साथ उन्होंने राक्षसों का सामना किया। बलि ने इन्द्र के साथ भयंकर युद्ध किया। उस संग्राम में राक्षस बुरी तरह हार गये। राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य ने मृतसंजीवनी विद्या के द्वारा मृत राक्षसों को पुनः जीवित कर दिया।

देवताओं से मुँहकी खाने के बाद बलि ने, बड़े लगन से राक्षसों को फिर से संगठित किया तथा देवताओं को हराकर अपने राज्य का विस्तार किया, सारे भूमण्डल पर अधिकार करके बड़ी दक्षता के साथ राज्य करते हुए बलि चक्रवर्ती कहलाया। शुक्राचार्य ने उसके द्वारा एक सौ अश्वमेध यज्ञ कराये।

इसके बाद बलि ने स्वर्ग पर आक्रमण कर दिया। उसके हमले से घबराकर स्वर्ग के निवासी देवता जंगलों में भाग गये। दिक्पाल भी बलि चक्रवर्ती की अधीनता को स्वीकार करके उसके आदेशों का पालन करने लगे। स्वर्ग, मर्त्य व पाताल लोकों पर चक्रवर्ती बलि न्याय और धर्मपूर्वक शासन करने लगा। उस समय इंद्र की माता अदिति अपने पति कश्यप से बोली- ''हमारी संतान बने देवता तथा शची व इन्द्र जंगलों में असह्य यातनाएं झेल रहे हैं। उन्हें पुनः स्वर्ग पाने का कोई उपाय हो तो बतला दीजिये!''

इस पर कश्यप ने कहा कि तुम विष्णु के प्रति भक्तिपूर्वक व्रत का आचरण करो। अदिति ने कश्यप के उपदेशानुसार विष्णु के प्रति आराधना करके उनको प्रसन्न किया। विष्णु ने बताया कि मैं तुम्हारे गर्भ से जन्म धारण करके देवताओं को फिर से स्वर्ग वापस दिलाऊँगा।

इस प्रकार विष्णु ने अदिति व कश्यप के यहाँ बौने शिशु के रूप में जन्म धारणकरके दशावतारों में से पांचवाँ वामनावतार लिया।

वामन ने उपनयन के बाद वैदिक विद्याएँ समाप्त कर लीं और इन्द्र के छोटे भाई तथा अदिति के प्यारे पुत्र के रूप में पलने लगे।

उस समय बलि चक्रवर्ती नर्मदा नदी के तट पर शुक्राचार्य के नेतृत्व में विश्वजित यज्ञ प्रारंभ करके अपार दान दे रहा था।

वामन ने जनेऊ, हिरण का चर्म व कमण्डलु धारण किया, छाता हाथ में लेकर खड़ाऊँ पहन लिया और मूर्तिभूत ब्रह्म तेज के साथ बलि

चक्रवर्ती के पास चल पड़े। छोटे-छोटे डग भरनेवाले वामन को देख यज्ञशाला में एकत्रित सभी लोग प्रसन्न हो उठे। वामन ने बलि चक्रवर्ती के समीप जाकर जय-जयकार किया।

वामन को देखते ही बलि के मन में अपूर्व आनंद हुआ। उसने पूछा- ''अरे मुन्ने ! तुम तो अभी शिशु के अवतार में ही हो, तुम कौन हो? एक नये ब्रह्मचारी के रूप में कहाँ चल पड़े?''

''मैं तुम से ही मिलने आया हूँ। मैं अपना परिचय क्या दूँ? सब लोग मेरे ही हैं, फिर भी इस वक्त मैं अकेला हूँ। वैसेमैं संपदा रखता हूँ, परइस समय एक याचक हूँ। तुम्हारे दादा, परदादा महान वीर थे। तुम्हारे शौर्य और पराक्रम दिगंत तक व्याप्त हैं।'' वामन ने कहा। इस पर बलि चक्रवर्ती हँसते हुए बोला- ''आप की बातें तो कुछ विचित्र मालूम होती हैं। आप शौर्य और पराक्रम की चर्चा कर रहे हैं। युद्ध करने की प्रेरणा तो नहीं देंगे न? क्योंकि इस वक्त मैं यज्ञकी दीक्षा लेकरबैठा हूँ।''

इस पर वामन बोले-''वाह, आपने कैसी बात कही? महान बल-पराक्रमी बने आप के सामने बौना बने हुए मेरी गिनती ही क्या है? आपका यश सुनकर याचना करने आया हूँ।''

''अच्छी बात है, मांग लीजिए, आप जो भी मांगे, वही देने का वचन देता हूँ।'' बलि चक्रवर्ती ने कहा।

इस पर शुक्राचार्य ने बलि को बुलाकर समझाया, ''ये वामन साक्षात् विष्णु हैं, तुम्हें धोखा देकर तुम्हारा सर्वस्व लूटने के लिए आये हुए हैं! तुम उन्हें किसी प्रकार का दान मत दो।''

बलि चक्रवर्ती ने कहा, ''विष्णु जैसे महान व्यक्ति मेरे सामने याचक बनकर हाथ फैलाते हैं, तो मेरे हाथों द्वारा कोई दान देना मेरे लिए भाग्य की ही बात मानी जाएगी, यह मेरी अद्भुत विजय का परिचायक भी होगा। इसके अतिरिक्त वचन देकर उस से विमुख हो जाना भी उचित नहीं है। मेरा वचन झूठा साबित होगा न?''

''आत्मरक्षा के वास्ते किया जाने वाला कर्म असत्य नहीं कहलाता, पर अनुचित धर्म भी आत्महत्या के सदृश्य ही माना जाएगा न?'' शुक्राचार्य ने कहा।

''चाहे जो हो, वे चाहे मेरे साथ कुछ भी करें, या मैं हार भी जाऊँ; फिर भी वह मेरी पराजय नहीं मानी जाएगी। यह धर्मवीरता ही होगी! वैसे शिवि

चक्रवर्ती आदि जैसे दान करके यश पाने की कामना भी मेरे अन्दर नहीं है, परन्तु वचन देकर इसके बाद उससे मुकर कर कायर कहलाना मैं नहीं चाहता।'' बलि चक्रवर्ती ने कहा।

इस पर शुक्रचार्य क्रोध में आ गये और शाप देने के स्वर में बोले, ''तुम्हारे गुरु के नाते मैं ने तुम्हारे हित केलिए जो बातें कहीं, उन्हें तुम धिक्कार रहे हो। याद रखो, तुम अपने राज्य तथा सर्वस्व से हाथ धो बैठोगे!''

बलि चक्रवर्ती ने विनयपूर्वक कहा, ''गुरु देव, आप नाहक अपयश के शिकार हो गए। मैं सब प्रकार के सुख-दुखों को समान रूप से स्वीकार करते हुए दान देने के लिए तैयार हो गया हूँ, पर आप का यह शाप विष्णु के लिए वरदान ही साबित हुआ, क्योंकि गुरु के वचन का धिक्कार करने के उपलक्ष्य में प्राप्त शाप को विष्णु केवल अमल करने वाले हैं; पर अन्यायपूर्वक उन्होंने बलि के साथ दगा किया है, इस अपयश से वे दूर हो गये। मैं आपके शाप को स्वीकार करता हूँ।''

शुक्राचार्य का चेहरा सफेद हो उठा। उन्होंने लज्जा के मारे सर झुका लिया। वे निरुत्तर हो गये।

इस के बाद बलि वामन के पास जाने लगे, तब शुक्राचार्य ने कहा, ''हे दानव राज, ''यह विनाश केवल तुम्हारे लिए हीनहीं, बल्कि समस्त दानव वंश का है और हम सब के लिए अपमान की बात है।'' शुक्राचार्य ने चेतावनी दी।

''यही नहीं, बल्कि एक दानव ने न्यायपूर्ण शासन किया है। धर्म का पालन किया है और विष्णु को भिक्षा दी है, इस प्रकार समस्त दानव वंश के लिए यश का भी तो कारण बन सकता है?'' बलि यों कह कर वामन के पास पहुँचे।

इसके बाद बलि चक्रवर्ती की पत्नी विंध्यावली स्वर्ण कलश में जल ले आई, स्वर्ण थाल में वामन के चरण धोये। उस जल को बलि ने अपने सर पर छिड़क लिया, तब बोले- ''हे वामन रूपधारी, आप जैसे महान व्यक्ति का मेरे पास दान के लिए पहुँचना मेरे पूर्व जन्म के पुण्यों का फल है। आप जो कुछ चाहते हैं, मांग लीजिए। रत्न, स्वर्ण, महल, सुंदरियाँ, शस्य क्षेत्र, साम्राज्य - सर्वस्व यहाँ तक कि मेरा शरीर भी आप के वास्ते प्रस्तुत है।''

''महाबलि, तुमने जो कुछ देना चाहा, उन को लेकर मैं क्या करूँगा? मैं तो हिरण का चर्म

बिछाये ब्रह्म निष्ठा करना चाहता हूँ। इस वास्ते मेरे लिए तीन कदम की जगह पर्याप्त है। ये तीन क़दम तुम्हारे दिगंतों तक फैले साम्राज्य में अत्यंत अल्प मात्र हैं, फिर भी मेरे लिए यह तीनों लोकों के बराबर है।'' बामन ने कहा।

''वे तीन क़दम ही ले लो।'' यों कह कर बलि ने अपने जल कलश के जल लुढ़काकर दान करना चाहा, पर उस में से जल न निकला। शुक्राचार्य ने सूक्ष्म रूप में जल कलश की सूंड में छिपे रहकर जल को गिरने से रोक रखा था। इस पर बामन ने दाभ का तिनका निकाल कर जल कलश की सूंड में घुसेड़ दिया। शुक्राचार्य अपनी एक आँख खोकर काना बन गया। इस पर वह हट गया, तब जलधारा बलि चक्रवर्ती के हाथों से निकल कर बामन की अंजुलि में गिर गई। दान-विधि के समाप्त होते ही बलि चक्रवर्ती ने कहा, ''अब आप द्वारा अपने चरणों से माप कर तीन क़दम जमीन प्राप्त करना ही शेष रह गया है।''

बामन ने झट इधर-उधर घूम कर विश्वरूप धारण किया, लंबे, चौड़े एवं ऊँचाई के साथ नीचे, मध्य व ऊपर - माने जाने वाले तीनों लोकों पर व्याप्त हो गये। एक डग से उन्होंने सारी पृथ्वी को माप लिया, त्रिविक्रम विष्णु के चरण की छाया में सारे भूतल पर पल भर केलिए गहन अंधकार छा गया। इसके बाद आकाश को माप लिया, उस वक्त सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र मण्डल आदि उनके चरण से चिपके हुए रेणुओं की भांति दिखाई दिये। तब ब्रह्मा ने अपने कमण्डलु के जल से विष्णु के

चरणों का अभिषेक किया। विष्णु के चरण से फिसलने वाला जल आकाश गंगा का रूप धर कर स्वर्ग में मंदाकिनी के रूप में प्रवाहित हुआ।

वामनरूपी त्रिविक्रम ने बलि से पूछा-''हे बलि चक्रवर्ती, बताओ, मैं तीसरा कदम कहाँ रखूँ?''

''हे त्रिविक्रम, लीजिए यह मेरा सिर! इसपर अपना चरण रखिये।'' यों कह कर बलि चक्रवर्ती ने अपना सर झुका लिया!

इस पर विष्णु ने अपने विश्वरूप को वापस ले लिया, फिर से वामन बनकर बलि के सर पर चरण रख कर बोले, ''बलि, पृथ्वी तथा आ काश को पूर्ण रूप से मापनेवाला यह मेरा चरण तुम्हारे सर को पूर्ण रूप से माप नहीं पा रहा है!''

उस समय प्रह्लाद ने वहाँ पर प्रवेश कर कहा, ''भगवन, मेरा पोता आपका शत्रु नहीं है, उस पर अनुग्रह कीजिये!''

बलि चक्रवर्ती की पत्नी विंध्यावली ने कहा, ''वामनवर, मेरे पति का किसी भी प्रकार से अहित न हो। ऐसा अनुग्रह कीजिये।''

''बहन, आप के पति केलिए हानि पहुँचाना किसी के लिए भी संभव नहीं है। इसलिए तो मैं ने याचक बनकर उन से दान लिया है। इनका धार्मिक बल ही कुछ ऐसा है।''

यों समझाकर वामन प्रह्लाद की ओर मुड़कर बोले, ''जानते हो, बलि मेरे लिए कितने प्रिय व्यक्ति हैं?'' यह कहते वामन विष्णु की संपूर्ण कलाओं के साथ शोभित हो लंबे वेत्र दण्ड समेत दिखाई दिये।

''हे बलि चक्रवर्ती, तुम्हारी समता करनेवाला आज तक कोई न हुआ और न होगा। आदर्शपूर्ण शासन करनेवाले चक्रवर्तियों में तुम्हारा ही नाम प्रथम होगा! मैं तुम्हें सुतल में भेज रहा हूँ। पाताल लोकों के अधिपति बन कर शांति एवं सुख के साथ चिरंजीवी बनकर रहोगे। तुम्हारी पत्नी तथा तुम्हारा दादा प्रह्लाद भी तुम्हारे साथ होंगे। मैं तुम्हारे सुतल द्वार का इसी प्रकार दण्डपाणि बनकर तुम्हारा रक्षक रहूँगा।'' यों कह कर वामनावतार विष्णु अंतर्धान हो गये।

भूमि को कैसे समतल बनाया गया

स्कॉट लैण्ड विस्मयकारी रूप से एक सुन्दर देश है। यह दो क्षेत्रों में बँटा हुआ है - दक्षिण की निम्म भूमि और उत्तर की उच्च भूमि।

उच्च भूमि का क्षेत्र निस्सन्देह नयनाभिराम है। शानदार पर्वत हैं और उनके मध्य में छोटी-छोटी घाटियाँ हैं। विशाल नीली झीलें हैं जिन्हें लॉक्स कहते हैं। कुल मिला कर उच्च भूमि का क्षेत्र एक अनगढ़ शान का चित्र प्रस्तुत करता है। यह स्पष्ट है कि यह एक भयानक क्षेत्र है जो वश में होने से इनकार करता है। प्रकृति अपनी सम्पूर्ण गरिमा के साथ अभी भी वहाँ सर्वशक्तिमान है।

फिर भी एक अपवाद है। यदि तुम्हें लॉक शील के किनारों से अन्दर के क्षेत्र में पैदल जाना पड़े तब तुम एक छोटी हरी घाटी में पहुँच जाओगे जो पहाड़ों की गोद में बसी है। यह घाटी तुम्हें विस्मय में डाल देगी। यह इतनी समतल और चिकनी कैसे हो सकती है जबकि सभी पड़ोसी घाटियाँ ऊबड़खाबड़ हैं और भूरी चट्टानों से भरी पड़ी हैं। आह! इसके पीछे एक दिलचस्प कथा है!

बहुत प्राचीन काल में यह छोटी घाटी भी अपनी सभी पड़ोसी घाटियों के समान उजाड़ थी जहाँ हर मार्ग पर, इसकी हर इंच भूमि पर विशाल और दाँतेदार शिलाएँ इस तरह बिछी पड़ी थीं कि वहाँ चलना मुश्किल था, खेतीबाड़ी तो दूर की बात थी। फलस्वरूप यहाँ के निवासी गरीब थे, क्योंकि फसल उगाने के लिए भूमि नहीं थी। उनके मवेशी भी भुखमरी के शिकार बने रहते, क्योंकि बहुत अल्प मात्रा में चारा उपलब्ध थी। इस प्रकार वे बहुत कष्टमय जीवन बिता रहे थे।

घाटी से नीचे आधे रास्ते पर पहाड़ी की ओट में छिपा एक छोटा-सा घर था। इसमें एक ज्ञानी वृद्ध रहता था जो सियेनचैध अथवा कथा वाचक

था। उसे सबकुछ मालूम था और वह सभी समस्याओं का समाधान जानता था।

एक दिन घाटी के युवकों ने सभा बुलाई और निश्चय किया कि अब बहुत हो चुका। अब उनसे ऐसा कष्टमय जीवन सहा नहीं जायेगा। अब वे उस स्थान को छोड़ कर अधिक अनुकूल स्थान पर जायेंगे जहाँ भूमि समतल हो। लेकिन उन्हें ऐसा स्थान कहाँ मिलेगा?

''चलें, सियेनचैध से पूछें!'' किसी ने सलाह दी और सब सहमत हो गये। वे समस्या बताने के लिए पहाड़ी के नीचे चल पड़े।

''हमलोग अपनी जाति में सबसे गरीब हैं।'' उन सब ने कहा। ''पर ऐसा नहीं है कि हम मेहनत करना नहीं चाहते। हमारी घाटी छोटी है और पहाड़ों से गिरी चट्टानों से भरी पड़ी है। हमलोग इस स्थान को छोड़ कर जाना चाहते हैं। क्या आप ऐसा कोई स्थान बता सकते हैं जहाँ पहाड़ियाँ दयालु हों और खेती करने योग्य भूमि हो।''

सियनचैध ने थोड़ी देर तक सोचा। तब फिर उसने झुक कर धरती से एक मुट्ठी मिट्टी उठायी। ''हमारी घाटी से अधिक मुलायम मिट्टी और कहीं नहीं मिलेगी'', उसने कहा।

''यह सच हो सकता है'', युवकों ने सहमति प्रकट की। ''लेकिन इन सभी चट्टानों को हटाने के लिए अलौकिक बल की आवश्यकता पड़ेगी, जो हमलोगों के बस का नहीं!''

''हम्म्म्म्....'' सियनचैध ने कुछ सोचते हुए कहा। ''देखते हैं, हम कैसे तुम्हारी समस्या का समाधान करें।''

उन दिनों धरती पर दैत्य रहा करते थे। वैसे दो विशाल और उजड्ड प्राणी पड़ोस के पर्वत पर रहते थे। वे इस बात पर हमेशा झगड़ते रहते थे दोनों में कौन ज्यादा मजबूत है। उस दिन सियनचैध उन्हें खोजने के लिए पर्वत शिखर पर चढ़ गया।

''यों झगड़ते रहना मूर्खता है, इस प्रकार तुम कभी भी निर्णय नहीं

कर सकोगे।'' उसने दैत्यों के सामने घोषणा की। ''मैं सिर्फ़ एक वृद्ध व्यक्ति हूँ लेकिन फिर भी मुझेविश्वास है कि मैं इस विवाद को हमेशा के लिए सुलझा सकता हूँ। कल नीचे घाटी में आ जाओ और तुम्हें अपने बल को प्रमाणित करने के लिए एक काम दूँगा ताके हर कोई देख सके कि तुम में से कौन अधिक बलशाली दैत्य है!''

दूसरे प्रात:काल जब दोनों दैत्य घाटी में उतरे तब दोनों के मेघ गर्जन के समान पद चाप से पर्वत गूँज उठे। सियन और तथा घाटी के अन्य लोगों ने उन दोनों दैत्यों का स्वागत किया।

''अब'', सियनचैध ने कहा, ''देखें, तुम दोनों छोटे पत्थरों को कितनी दूरी तकफेंक सकते हो? क्या उस पहाड़ की चोटी तक फेंक सकते हो?'' उसने एक चोटी की ओर इशारा किया।

दोनों दैत्य ठठा कर हँसे। उन दोनों ने झुक कर दो बड़ी शिलाओं को ऐसे उठाया जैसे कोई समुद्र तट से कंकड़ उठाता हो और उन्हें नज़र से बहुत दूर पर्वतों की ओर फेंक दिया।

''मुझे मानना पड़ेगा कि तुम दोनों ने समान रूप से बहुत अच्छा प्रदर्शन किया, इतना अच्छा कि यह निर्णय करना कठिन हो रहा है कि दोनमें अच्छा प्रक्षेपक कौन है। इसलिए फिर एक बार कोशिश क्यों नहीं करते?'' वृद्ध व्यक्ति ने सलाह दी और बाद में यह भी जोड़ दिया, ''लेकिन इस बार बड़े पत्थरों को लेना!''

दैत्यों को दूसरी बार कहने की जरूरत नहीं पड़ी । उन दोनों ने दो अति विशाल शिलाओं को उठाया। प्रत्येक चट्टान इतनी बड़ी थी कि उसे हिलाने के लिए कम से कम १५/२० आदमियों को ताकत लगानी पड़ती। लोगों ने बिस्फारित नेत्रों से देखा कि दोनों दैत्यों ने अनायास उन शिलाओं को दूर तक उछाल दिया।

लेकिन सियनचैध शान्त बना रहा। ''इस परीक्षा से यह निर्णय करना कठिन है कि तुम दोनों में से कौन अधिक बलवान है?'' उसने घोषित किया। ''अब इस प्रकार कोशिश करें। क्या तुम मैदान में और विशाल चट्टानों और शैल खण्डों को नहीं देखते? देखें, तुममें से हरेक कितने

पत्थरों को फेंक सकता है, पहले तो बाँयें हाथ से, तब फिर दाँयें हाथ से?''

अविलम्ब दैत्यों ने शिलाखण्डों को चुनना शुरू कर दिया और बाँयें हाथ से उन्हें हवा में पर्वतों पर फेंकने लगे। घाटी में चारों ओर वे चलते गये और धरती पर से पत्थरों को उठा-उठा कर दूर-दूर तक फेंकते गये। जब ये शिला-खण्ड पर्वतों पर से होकर उड़ते तो भयंकर गर्जन से दिशाएँ गूंज जातीं।

जब उनके बाँयें हाथ में पीड़ा होने लगी, तब वे दाँयें हाथ का प्रयोग करने लगे। लेकिन सूर्यास्त तक वे प्रतियोगिता करते रहे। तब तक शायद ही कोई पत्थर बच गया था। जहाँ तक दैत्यों का सम्बन्ध था, वे इतने थक गये थे कि खड़ा रह पाना उनके लिए कठिन हो गया।

अब सियनचैध ने कहा, "अभी भी हम कह नहीं सकते कि तुममें से कौन अधिक बलवान है, क्योंकि जो पत्थर फेंके गये हैं, उनकी गिनती हम भूल गये। इसलिए तुम दोनों जाकर यह देखो कि कौन-सा पत्थर सबसे ज़्यादा दूर फेंका गया है। और जब वह मिल जाये तो उसे हमलोगों के पास ले आओ और तब हमलोग यह देखेंगे कि कौन इस करतब को फिर से कर सकता है? तभी जान सकते हैं कि तुम दोनों में कौन महान है!''

दोनों मूर्ख दैत्य, जो अभी भी आपस में झगड़ रहे थे, सबसे अधिक दूर फेंके गये पत्थर की तलाश करने चले गये। आखिरी दम तक वे यह नहीं समझ सके कि उनकी ताकत का चतुर सियनचैध द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयोग किया गया था।

यदि तुम्हें यह पता चले कि उन दैत्यों की तलाश आज तक जारी है तो तुम्हें आश्चर्य नहीं करना चाहिये, क्योंकि वे कभी लौट कर नहीं आये। कहा जाता है कि उनके झगड़ों की आवाज तब सुनी जा सकती है जब हवा दाँयी ओर की दिशा में बहती है। लेकिन उस घाटी का क्या हुआ जहाँ के सभी अवरोध अति सावधानी के साथ साफ कर दिये गये?

कहने की आवश्यकता नहीं कि लोगों ने वहाँ की भूमि को जोतने में बिलम्ब नहीं किया जो उन्हें मानों थाल में सजा कर भेंट स्वरूप दी गई थी। और उस वृद्ध सियनचैध की उपाय -कुशलता को इसलिए धन्यवाद देना चाहिये कि आज लॉक शील के पास की इस छोटी हरी घाटी जैसी अच्छी फसल समस्त स्कॉट लैण्ट की उच्च भूमि में कहीं नहीं पाई जाती।

कंजूस और बहुरूपिया

गुरुनाथ एक गाँव का बड़ा ही अमीर था, लेकिन पक्का कंजूस था।

एक बार उस गाँव में एक बहुरूपिया आया। वह संन्यासी का वेष धरकर गुरुनाथ के दर्वाज़े पर आया और चिल्लाकर कहने लगा- "भवती भिक्षां देहि !"

ये शब्द गुरुनाथ को कर्ण कठोर से लगे! उसने बाहर आकर संन्यासी पर नज़र डाली और पूछा- "अबे, तुम्हें क्या हो गया है? भीख माँगते हो! क्या तुम अन्धे हो या लंगड़े?" ये शब्द कहकर उसने किवाड़ बंद कर लिये।

दूसरे दिन बहुरूपिया अंधे का वेष धरकर गुरुनाथ के मकान के आगे आया और बोला- "माई, अंधे को थोड़ा दान कर दो।"

उसे देख गुरुनाथ गुस्से में आ गया और दुत्कारते हुए बोला- "अबे, भीख माँगने के लिए आ गये! तुम लंगड़े हो या गूँगे हो? जाओ, चले जाओ !" तीसरे दिन बहुरूपिया गूँगे आदमी का अभिनय करते घंटी बजाते गुरुनाथ की ड्योढी पर आ पहुँचा।

गुरुनाथ ने उसे देख पूछा- "अबे, तुम्हें क्या हो गया है?"

बहुरूपिया ने अपने को गूँगा आदमी होने का अभिनय करके दिखाया।

"ओह, गूँगे आदमी हो? तो भी क्या हुआ? हाथ-पैर तो ठीक हैं? काम-बाम क्यों नहीं करते?" यों समझाते गुरुनाथ ने किवाड़ बंद कर लिये।

दूसरे दिन सबेरे गुरुनाथ की पत्नी ने अपने रसोई घर में एक साँप को देखा। वह दौड़कर बाहर आ गई। बाहर चबूतरे पर बैठे अपने पति से बोली- "अजी! घर के अन्दर साँप घुस आया है! साँप है साँप !"

गुरुनाथ दौड़कर अन्दर पहुँचा। रसोई में

रेंगनेवाले साँप को देख ''साँप-साँप'' चिल्लाते बाहर दौड़कर आया।

अड़ोस-पड़ोस के लोग भी दौड़कर आ पहुँचे और साँप को मारने का प्रयत्न किये बिना तरह-तरह के सवाल पूछने लगे-''साँप कहाँ पर है? कितना बड़ा है? क्या नाग है? किस जाति का है? उसका रंग कैसा है !'' मगर कोई भी घर के अन्दर नहीं घुसा।

इतने में उधर से एक संपेरा निकल आया। गुरुनाथ की जान में जान आ गई। वह अपने पसीने को पोंछते हुए बोला- ''सुनो, हमारे रसोई घर में नाग घुस आया है। उसे पकड़कर हम लोगों को बचाओ !''

''क्या बोले? नाग है! क्या दिखाई दे रहा है?'' संपेरे ने पूछा।

''नहीं, अब दिखाई नहीं देता ! वह किसी बिल में घुस गया है।'' गुरुनाथ ने जवाब दिया।

''तब तो मुश्किल है! कहते हैं कि नाग अगर दुश्मनी मोल लेता है तो बारह वर्ष तक भूलता नहीं! एक ही बार में अगर उसे मार नहीं डाला तो बड़ा खतरा होगा।'' संपेरे ने डर दिखाया।

''तुम्हीं अगर यहबात कहते हो तो हम लोगों का क्या हाल होगा?'' गुरुनाथ ने समझाया।

''ठीक है। साँप निकाल दूँगा लेकिन काम है खतरनाक। जान का खतरा है। पाँच सौ रुपये लूँगा। बोलो, मंजूर है?'' संपेरे ने कहा। पाँच सौ सुनकर गुरुनाथ की सांस रुक गई। ''बाप रे इतना रुपया!'' उसने मन में सोचा।

आखिर सौ रुपये का सौदा ठीक कर संपेरा रसोई घर में गया, नागस्वर फूँका, तब दीवार के

छेद में से साँप बाहर निकल आया और फन फैलाकर नाचने लगा। संपेरे ने झट से उसकी गर्दन पकड़कर उसे पिटारी में बंद कर दिया।

गुरुनाथ को लगा कि उसकी जान में जान आ गई है। पर संपेरे को सौ रुपये चुकाते वक़्त उसे लगा कि उसके प्राण सूखते जा रहे हैं। संपेरा सौ रुपये लेकर खुश होते हुए गुरुनाथ की तारीफ़ करते चला गया।

आखिर दरियाफ़्त करने पर पता चला कि संपेरा और कोई नहीं बल्कि बहुरूपिया है। उसने गुरुनाथ का दरवाजा कई बार खटखटाया, लेकिन एक बार भी उसे उससे कुछ नहीं मिला। इसीलिए उसने अपने पालतू साँप को गुरुनाथ के घर में भेज दिया था। इस पर गुरुनाथ का क्रोध उबल पड़ा। उसने गाँव के मुखिया के पास जाकर शिकायत की कि बहुरूपिये ने उसे दगा दिया है, इसलिए उसके रुपये उसे वापस दिलवा दे।

मुखिया ने बहुरूपिये को बुलवा कर डांटा। उसने सारी बातें सच्ची सच्ची बतला कर कहा- ''हुज़ूर! आप ही बताइये, गुरुनाथ जैसे अमीर लोग ही हम जैसे कलाकारों का पोषण नहीं करते तो हमारा क्या हाल होगा?''

मुखिये ने समझाया-''सुनो, तुम अपनी कला का प्रदर्शन करके पुरस्कार प्राप्त कर लो तो हमें कोई आपत्ति न होगी। लेकिन तुमने गुरुनाथ को धोखा दिया है. इसलिए तुम उनके रुपये वापस कर दो।''

बहुरूपिये ने गुरुनाथ को सौ रुपये वापस कर दिये। तब मुखिया ने अपना फ़ैसला सुनाया- ''गुरुनाथ जी! जिस पेड़ में फल लदे हैं,लोग उसी पर पत्थर फेंकते हैं! जिसके पास धन होता है, उसी के आश्रय में निर्धन व्यक्ति जाता है। वह अपनी भूख मिटाने आया है! आप जैसे लोगों का उसे दान देना अपना कर्तव्य हो जाता है। उसे पच्चीस रुपये इनाम दे दीजिये।''

गुरुनाथ ने न केवल संपेरे को पच्चीस रुपये दिये, बल्कि उसने जो सबक़ सिखाया था, उसको आदर्श बनाकर अपनी कंजूसी को भी तिलांजलि दी। और समाज की जरूरतों के प्रति वह अधिक उदार दृष्टिकोण अपनाने लगा।

क्रोधी-कायर

मांचाल नामक गांव में बलभद्र नामक एक संपन्न किसान रहा करता था। वह बड़ा ही क्रोधी स्वभाव का था। गांव में वह किसी की परवाह नहीं करता था। कितना भी बड़ा आदमी क्यों न हो, क्रोध-भरे स्वर में ही उससे बातें किया करता था। उससे कोई कहता कि तुम यह अच्छा नहीं कर रहे हो तो वह फट से जवाब देता, ''तुम कौन होते हो, मुझे सबक सिखानेवाले? क्या तुम काशी में विद्याभ्यास करके लौटे हो? या रामेश्वरम हो आये हो? चल,चल, आपना काम देख।''

सर्दी के दिनों में एक दिन तड़के ही वह चार-पांच ग्रामीणों के साथ आग के पास बैठकर हाथ-पांव सेंक रहा था । साथ ही बैठे हुए मिट्ठू ने अचानक देखा कि बलभद्र ने जो दुपट्टा ओढ़ रखा था, उसके किनारे में आग लग गयी। पर डर के मोरे उसने मुंह नहीं खोला। स्वभाव से वह कायर था।

मिट्ठू को अच्छी तरह से मालूम था कि बलभद्र कितना तुनक-मिजाज है और चिड़चिड़े स्वभाव का है। जब आग ने ज़ोर पकड़ लिया तो पहले से ही उसे सावधान करने के उद्देश्य से मिट्ठू ने कहा ''बलभद्र, एक बात कहना चाहता हूँ, कहूँ?''

आँखें लाल करते हुए बलभद्र ने उसकी ओर गुर्रा कर कहा, ''तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मुझसे कुछ कहने पर तुल गये? सावधान, मुंह से एक बात भी निकाली तो तुम्हारी जीभ काट दूँगा।'' उसने कह क्या दिया, देख भी लिया कि दुपट्टा आधे से ज्यादा जल चुका है उसने तुरंत दुपट्टे को दूर फेंक दिया और मिट्ठू से कहने लगा, ''अरे मूर्ख, दुपट्टे में आग लग गयी है और यह देखते हुए भी बताने में तुमने इतनी देर लगा दी।''

इसपर मिट्ठू ने कहा, ''करूँ भी क्या? तुम तो तुनक-मिजाज हो। बात-बात पर नाराज़ होते रहते हो, दुत्कारते रहते हो, मैं तो बताना चाहता था, पर तुम्हारी नाराज़ी ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया। न ही मेरा विद्याभ्यास काशी में हुआ है, न ही मैं रामेश्वरम हो आया हूँ।''

- वेणु

12
आर्य
शान्तिपुर की गद्दी को अनधिकार रूप से हड़पनेवाला बीर सिंह देखता है कि उसकी सारी योजनाएँ बिफल हो गई हैं। वह चाहता है कि जमीन्दारों से जब्त किये गये चावल के बदले हथियार उपलब्ध किये जायें। दरबार में चेतावनी के एक सन्देश के साथ एक तीर आता है। सन्देश में उसी के शब्द उद्धृत होते हैं। क्या दरबार में कोई जासूस है? सेना शिविर में सैनिकों को सचेत रखा जाता है।
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
कई वर्ष गुजर जाते हैं। जयानन्द द्वारा जिस शिशु का नाम आर्य रखा गया था, वह अब पाँच वर्ष का एक सुन्दर बालक है।
क्या जंगल इतना सुन्दर हो सकता है?
भोला हाथी हमेशा उसके लिए कुछ करना चाहता है। मद्दी तोता उन पर निगरानी रखता है।
हे, मुझे कहाँ ले जा रहे हो?
व्याघ्र शावक आर्य के जिन्दादिल साथी हैं।
ऋषि वर्द्धनशील बालक को ज्ञान का उपदेश देते हैं।
ध्यान और प्रार्थना साथ-साथ होते हैं।
ओम् ओम् ओम्
प्रकृति ईश्वर का एक रूप है।

शाम को वे पहाड़ की चोटी पर जाते हैं। बालक की जानकारी के बिना ऋषि उसे अपनी कुछ शक्तियाँ प्रदान कर देते हैं।
एक शाम को...
बाबा, मेरी माँ कौन है? मेरे पिता कौन हैं?
तुम एक विशेष बालक हो, आर्य।
आप हमारे पिता हैं! और प्रकृति मेरी माँ है !
मेरे बच्चे, तुम अपनी उम्र से कहीं अधिक बुद्धिमान हो!
भगवान का प्रेम सदा तुम पर बरसता रहे!
बाबा, आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ।
जयानन्द को मालूम हो गया है कि एक बाहरी अपरिचित आदमी दूर से आर्य को देखता रहता है।
वह बालक कौन हो सकता है?
मेरे आश्रम में आप का स्वागत है।
क्या आप को किसी व्यक्ति या चीज़ की तलाश है? क्या मैं आप की सहायता कर सकता हूँ?
जी हाँ...
यदि मैं ऋषि जयानन्द की उपस्थिति में हूँ तो उन्हें मेरा प्रणाम!
आप का अनुमान सही है।

यदि आप अपना परिचय बता दें तब मैं आप के प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ।
क्या मैं जान सकता हूँ कि वह बालक कौन है?
अपरिचित व्यक्ति चेहरे से वस्त्र हटा लेता है।
मेरा पुत्र!
महाराज! यह बालक आप का पुत्र है!
पाँच वर्षों में वह कितना बड़ा हो गया है!
आर्य अपरिचित आगन्तुक और ऋषि की उपस्थिति से बेखबर खेलने में मस्त है।
मेरे सेनापति ने मुझे, मेरी पत्नी और मेरे बेटे को मारने का प्रयास किया। उसे नहीं मालूम कि हमलोगों का क्या हाल हुआ। हो सकता है कि उसकी धारणा में मैं मर चुका हूँ।
मैं जानता था कि यदि आप जीवित हैं तो एक दिन अपनी रानी और कुमार की खोज में इधर आयेंगे। अपने बच्चे को मुझे सौंप कर वह स्वर्ग सिधार गई!
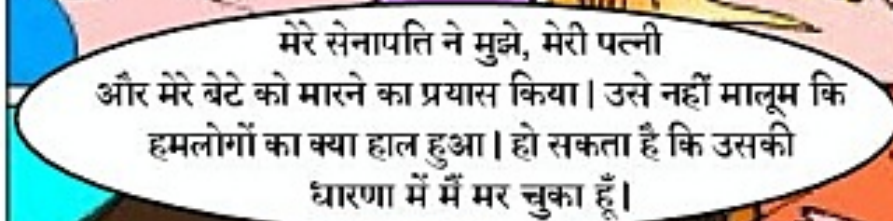
फिर क्या हुआ?
वह शांति से वहाँ समाधि में सो रही है। आप का पुत्र प्रतिदिन उसकी समाधि पर पुष्प अर्पित करता है।
शान्तिदेव समाधि की ओर बढ़ते हैं...
वे शोक से अभिभूत हो जाते हैं।
मेरी रानी! मैं तुम्हारी रक्षा न कर सका!
जयानन्द उसके निकट जाकर बैठ जाते हैं और उसे सान्त्वना देते हैं।
राजा सन्तुलित हो जाते हैं और अचानक...
क्या मैं अपने बेटे से मिल सकता हूँ?
निस्सन्देह, यदि आप ऐसा चाहते हैं! लेकिन महाराज! उसे यह महसूस करने में कुछ समय लग सकता है कि आप उसके पिता हैं।
मैं समझ रहा हूँ ऋषि प्रवर!
क्रमशः

कुकिंग गैस बचाइये

वीना अभी-अभी अंटी के घर से वापस लौट कर आयी थी। ''तो कहो प्यारी, वहाँ कैसा समय कटा?''

वीना ने बड़े उत्साह के साथ उत्तर दिया, ''मम्मी, मेरा समय वहाँ बड़े आश्चर्यजनक ढंग से कटा। मैंने सीखा कि दाल-चावल और सब्जी कैसे बनाई जाती है। मैं और सुप्रिया दोनों मिलकर खाना बनाते थे।''

मम्मी ने बड़े प्यार से पूछा, ''और क्या-क्या सीखा?''

''हाँ, अंट सुधा ने बताया कि कुकिंग गैस की बचत कैसे करनी चाहिये। जैसे-चूल्हे को जलाने से पहले खाना बनाने की सभी सामग्री को तैयार रखना। चावल और दाल को पहले ही पानी में डाल कर रख देना चाहिये। फ्रिज से चीजें पहले ही निकाल कर उन्हें गर्म करने से पहले सामान्य ताप में आने देना चाहिये।'' वीना ने कहा। मम्मी ने बड़े ध्यान से उसकी बात सुनी। ''बहुत अच्छा! लेकिन कुछ और ऐसी चीजें हैं जो तुम्हें ठीक खाना पकाते समय करना चाहिये।'' मम्मी उसे रसोई घर में ले गई और हर रोज रसोई पकाने के बर्तन उसे दिखाये। वीना ने ध्यान से देखा कि वे बर्तन पतले और गहरे होने की बजाय चौड़े और उथले हैं। मम्मी ने कहा, ''इन बर्तनों से जलावन की बचत में मदद मिलती है, क्योंकि ताप बर्तन में सब ओर बराबर पहुँचता है। प्रेशर कुकर में पकाना सबसे अच्छा होता है, लेकिन जो पकवान प्रेशर कुकर में नहीं पका सकते, उनके लिए ऐसे बर्तन ठीक रहते हैं। ढक्कन को हमेशा बर्तन के ऊपर डाल कर रखना चाहिये जिससे ताप व्यर्थ न जाये।''

''मैं यह सब नहीं जानती थी।'' वीना ने कहा।

''जब पानी खौलने लग जाये तो फ्लेम को कम रखने से गैस की और भी बचत की जा सकती है।'' मम्मी ने कहा, ''छोटा बर्नर बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है, क्योंकि इससे कम गैस लगती है। हमें इसका भी ध्यान रखना चाहिये कि बर्नर हमेशा साफ हो जिससे गैस का प्रवाह मुक्त रहे।''

''वाह! क्या इसे मैं ''रसोई घर में शिक्षा कहूँ?'' वीना ने अन्त में कहा।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

तुम्हारी आवाज

क्या तुम जानते थे कि तुम्हारी आवाज अनोखी है? दुनिया में किन्हीं दो व्यक्तियों की, दो जुड़वें लोगों की भी, ठीक एक जैसी आवाज नहीं हो सकती।

बोलने की क्रिया में सैकड़ों मांस पेशियों की गति को क्षण भर में समन्वय स्थापित करना पड़ता है। वाक् इन्द्रिय अथवा कण्ठ यानी स्वर यन्त्र अनन्त प्रकार के स्वर उत्पन्न करने में समर्थ है। कण्ठ उपस्थियों की एक मजबूत दीवार से बना होता है। इसके अन्दर के अस्तर में टिशु की दो परतें होती हैं जो हर तरफ फैली होती हैं और उनके बीच में रिक्त स्थान होता है।

अधिकांश प्रौढ़ पुरुषों की आवाज महिलाओं की अपेक्षा भारी होती है, क्योंकि पुरुष का कण्ठ महिलाओं की अपेक्षा बड़ा होता है और स्वर-रज्जु लम्बा होता है।

तुम्हारा प्रतिवेश

वृक्ष जिसकी जड़ें ऊपर होती हैं

क्या कभी ऐसा वृक्ष देखा है जो देखने में ऐसा लगे मानों इसे उलटा रोपा गया हो। इतना ही नहीं, इसकी लम्बी-चौड़े खोखली धड़ में अनेक लोग शरण ले सकते हैं तथा यह तीन हजार वर्षों तक जीवित रह सकता है।

अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया में मूल रूप से पाये जानेवाले इस अनोखे वृक्ष का नाम है - बाओबाब वृक्ष। पीपे की तरह इसकी धड़ का व्यास ३० फुट (९ मी.) तथा ऊँचाई ६० फुट (१८ मी.) तक जा सकती है।

बाओबाब की बड़ी ही विचित्र आकृति है। जब इसके पत्ते झड़ जाते हैं, तब इसकी फैली हुई शाखाएँ हवा में चिपकी जड़ों के समान दिखाई पड़ती हैं और यह औंधा जैसा दृश्य प्रस्तुत करता है। धड़ चिकनी और चमकीली होती है तथा छाल गुलाबी भूरे रंग की या कभी-कभी ताम्बे के रंग की होती है।

విజ్ఞానం .... వినోదం .... వికాసం ....

మీకు తెలుసా?

మొట్టమొదటి తాళం చెవులు

తాళం చెవులు ఎలా ఆరంభమయ్యాయి అని మీరెప్పుడైనా ఆలోచించారా? వాటికీ ఒక చరిత్రవుంది. అయితే, ఆరంభకాలంనాటి తాళం చెవులకూ, ఇప్పుడు మనం ఉపయోగిస్తున్నవాటికీ పోలికలేదు.

ప్రాచీన నైనెవా నగర శిథిలాలను బట్టి, దాదాపు 5000 సంవత్సరాలకు పూర్వమే ఈజిప్టులో తాళం చెవులు ఉపయోగించేవారని కనుగొనబడింది. వాళ్ళలో

ఇప్పుడే పెద్ద పెద్ద కొయ్య బోల్టు తాళాలు తయారు చేసేవారు. గాడి మీద కదిలే కొయ్య దిమ్మలు అమర్చేవారు. గడియె లోపలకి రాగానే, ఆకర్షణశక్తి కారణంగా దిమ్మలు గడియె లోని రంధ్రాలలో పడి బిగుసుకుపోయేవి. ఆ తరవాత తాళం చెవితో, ఆ దిమ్మలను పైకెత్తే వరకు గడియె గట్టిగా బిగుసుకుని ఉండేది. ఈజిప్టు తాళంచెవి, తలుపుకు బోల్టువున్న ఒకవైపున మాత్రమే పనిచేసేది. గ్రీకులు ఉపయోగించిన తాళంచెవి ఆకారంలోనూ పరిమాణంలోనూ కొడవలిని పోలి ఉండేది. రోమనులు ఉపయోగించిన తాళంచెవులు ఒక చోటి నుంచి మరొక చోటికి తీసుకువెళ్ళడానికి వీలుగానూ, డూప్లికేట్లు తయారు చేయడం కష్టంగానూ ఉండేవి.

లోకజ్ఞానం :

భక్తులు – గురువులు

1. శ్రీకృష్ణ భక్తితో రాజభోగాలను త్యజించిన భక్తురాలు ఎవరు?

2. సిక్కుల పవిత్ర గ్రంథమైన 'ఆది గ్రంథ్'లో ఏ ఏ మతబోధలు ఉన్నాయి?

3. మహారాష్ట్ర అహ్మద్‌నగర్ సమీపంలో నివసించిన ఒక మహనీయుణ్ణి మహమ్మదీయులు, హిందువులు భక్తితో కొలిచేవారు. ఆయన పేరేమిటి?

4. ఆదిశంకరులు స్థాపించిన ఐదు మఠాలలో ఒకటి తమిళనాడులో ఉంది. అది ఏది?

5. రామానుజాచార్యులు స్థాపించిన మతం పేరేమిటో తెలుసా?

(సమాధానాలు 66వ పేజీలో)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न.९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

अप्रैल अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

रोमा,
C/o. प्रिंस होस्टल,
सिविल लाइन्स, लुधियाना (पंजाब)

विजयी प्रविष्टि

आओ मिल कर भरें रंग
कोई नहीं है मेरे संग

अपने बौद्धिक स्तर की जाँच करो: उत्तर

१. मीरा
२. गुरुनानक
३. शिरडी के साईं बाबा
४. कांची पुरम
५. अहोबिला मठ

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (HINDI) JUNE 2004 REGISTERED NO ... 04/03-05
REGD. WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER FOR INDIA NO.1114/57
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO.381/03-05 ... WPP NO 382/03-05